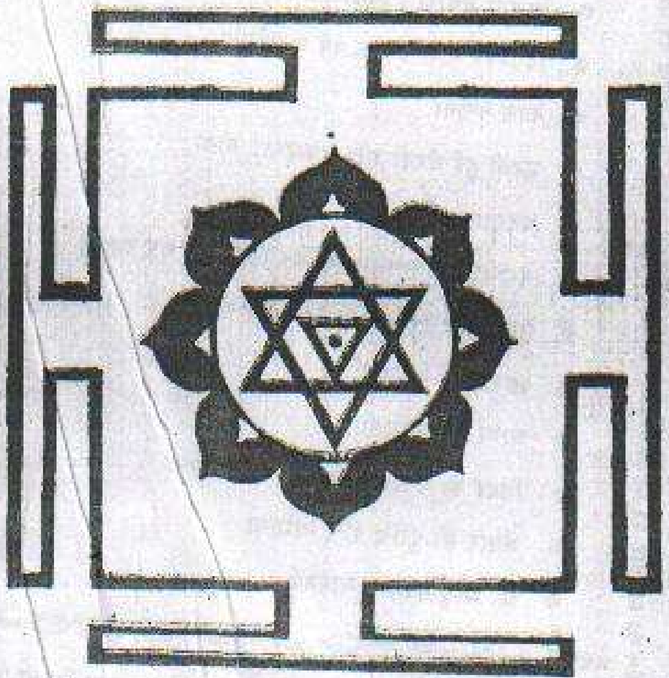
दिसम्बर 1984

मंत्र·तंत्र·यंत्र

विज्ञान



बगलामुखी मन्त्र

सुधार : पेज नं० १० और ११ पर अलग-अलग कालगणना छप गई है, अतः पाठक ११ पर छपी कालगणना को ही प्रामाणिक मानें।

विषय-सूची

ब्लाक सेटिंग, छपाई, जिल्दबन्दी तथा मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान एवं अरविन्द प्रकाशन से सम्बन्धित सभी कार्य गुरुदेव के शिष्यों व आगन्तुक गृहस्थ भक्तों द्वारा निःस्वार्थ भाव से सम्पादित किये जाते हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का गौरवशाली विशेषांक

रहस्य रोमांच युक्त

अद्भुत आख्यान विशेषांक

जनवरी १९८५

अद्भुत आख्यान विशेषांक की तैयारियां प्रारम्भ हो गई है, और पत्रिका छपनी शुरू हो गई है, इसका एक-एक लेख वर्षों-वर्षों तक याद रहेगा, हमने कोशिश की है, कि प्रत्येक लेख प्रामाणिक हो, संग्रहणीय हो, गोपनीय रहस्यों को उजागर करने वाला हो, इन सारे लेखों में से कुछ लेखों की झांकियां देखिये-

- सिद्धाश्रम : स्वर्ग तुल्यो नगराणा

[illegible]

- **अन्तरंग मुलाकातें : हिमालय के कुछ योगियों से**

जो सिद्ध है, तपस्या रत है, अद्वितीय सिद्धियों के स्वामी है उन योगियों से अन्तरंग मुलाकातें और इन मुलाकातों में लेखक को जो कुछ प्राप्त हुआ है, वह तो अद्वितीय है, आश्चर्यजनक है, अद्भुत है....प्रस्तुत कर रहे हैं, आपके लिए ये अद्वितीय तथ्य....

- **प्रतिशोध : तांत्रिक का**

[illegible] ...और जब [illegible] तांत्रिक ने प्रतिशोध लिया तो

○ उर्वशी के साथ [illegible] दिन

[illegible]

○ हेम्रोब्रासोज : शुक्र ग्रह का निवासी

[illegible]

○ सिद्धमल : स्वर्ण प्रक्रिया का दुर्लभ ज्ञान

[illegible]

○ [illegible]

[illegible]

○ अदृश्य होने की कला

[illegible]

○ मैंने गर्भ में ही चारों वेद सीखे हैं

[illegible]

○ इक्कीस महीने का गर्भ धारण कीजिये

चौंकिये मत, यदि पूर्ण तेजस्वी पुत्र को जन्म देना है तो इक्कीस महीने का गर्भ धारण कीजिये और यह सम्भव है...प्राचीनतम महर्षियों द्वारा प्रणीत आश्चर्यजनक वरदान ... एक अद्भुत आलेख।

○ छः जड़ी बूटियां, जो आपका कायाकल्प करने में सक्षम हैं

एक गोपनीय आयुर्वेदिक जानकारी... विशिष्ट दुर्लभ जड़ी बूटियां जो सबके लिए सहज हैं, जिनके माध्यम से शरीर के समस्त रोग मिटाये जा सकते हैं... वृद्धावस्था को यौवन में बदला जा सकता है... [illegible]

○ शून्य में से कोई भी पदार्थ प्राप्त कीजिये

[illegible]

○ इन लेखों के अतिरिक्त भी कई और महत्वपूर्ण लेख ... तंत्र-मंत्र से सम्बन्धित प्रामाणिक लेख...

अन्य पत्र-पत्रिकाएं मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान की नकल पर जहां मात्र कपोल कल्पित कथाएं ही छापती हैं, वहां मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान जो कुछ छापता है, प्रामाणिक...और सच्चा...और मात्र कहानियां ही नहीं...दुर्लभ मन्त्र-तन्त्र, [illegible] जड़ी बूटियों का प्रामाणिक ज्ञान भी।

कौन होगा ऐसा जो [illegible] ...और फिर यह सब मात्र सत्तर रुपयों में......

विशेषांक प्रकाशित हो रहा है

अभी से अपनी प्रति प्राप्त कर लें

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

[illegible]

सम्भवतः आपका शुल्क दिसम्बर में समाप्त हो रहा है, लौटती डाक से ही वार्षिक शुल्क सत्तर रुपये भेज दें, जिससे आपको यह दुर्लभ विशेषांक लौटती डाक से ही प्राप्त हो सके।

पत्रिका-परिवार को अद्वितीय उपहार

विश्व विख्यात, अद्वितीय दुर्लभ

लघु पारद शिवलिंग

[illegible]

[illegible]

पर आप इस अद्वितीय शिवलिंग को [illegible] प्राप्त कर सकते [illegible]

यदि १० दिस० १९८४ से पहिले-पहिले आप सन् १९८५ का पत्रिका शुल्क (७०) रु० भेज देते हैं।

ध्यान रहे इस प्रकार के दुर्लभ शिवलिंग कम ही हैं अतः इस [illegible] के बाद आने वाले शुल्क पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

धनराशि केवल मनिआर्डर या ड्राफ्ट से ही स्वीकार्य होगा।

वर्ष : १४
अंक : १२
दिसम्बर : १९८४

सम्पादक
कैलाशचन्द्र श्रीमाली

卐

मुख पृष्ठ
साधक

कार्यालय पता —
मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डा० श्रीमाली मार्ग,
हाईकोर्ट कोलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)
टेलीफोन : २२२०९

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, ऊर्ध्वमुखी प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

ॐ दिवो दिवेन सह पूर्ण सह कृतेन दिवेन एता सह, अरत्वं न मृते न दिवे सह ॥

हम भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण रखते हुए साथ-साथ चलें, स्वार्थवश आलोचना कर अपने आपको मृतवत् न बना लें, निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हों।

卐

मुद्रक : अरविन्द प्रिन्टर्स, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान) फ़० ४५०० फोन : २२२०९

प्रतिक्रिया

अद्भुत आख्यान विशेषांक के बारे में पत्रिका में तो विवरण पढ़ा ही था, पर जोधपुर आने पर आपने जनवरी का यह विशेषांक मुझे पढ़ने के लिए दिया, वास्तव में ही इतने पृष्ठों का ऐसा अद्वितीय विशेषांक अभी तक पूरे भारतवर्ष में न तो कहीं पर प्रकाशित हुआ है और न होगा, आपने जो सामग्री इस विशेषांक में दी है; वह तो अद्वितीय है, अप्रतिम है, आश्चर्यजनक है, मैंने विशेषांक को आठ बार पढ़ा है, और अभी भी जी नहीं अघाया है।

पुरुषोत्तम दास शर्मा, बम्बई

'उड़ती हुई भैरवी और वज्रमुक्ता योग' लेखमाला एक रहस्यमय, यथार्थ और महत्वपूर्ण लेखमाला है, मैं इसे गुजराती में अनुवाद कर प्रकाशित करना चाहता हूँ, जिससे कि गुजरात की जनता इस अद्वितीय, प्रामाणिक यथार्थ लेखमाला से परिचित हो सके, कृपया मुझे लौटती डाक से ही इसकी आज्ञा प्रदान करें, चार-पांच विशिष्ट पत्रिका-सम्पादकों ने भी इसके गुजराती अनुवाद को छापने की इच्छा प्रकट की है।

हर्षद भाई, सूरत

'वायवीय सिद्धि' लेख देकर आपने मेरी वर्षों की इच्छा पूरी कर दी है, इतने गोपनीय और श्रेष्ठ प्रयोग इस पत्रिका के अलावा और कौन दे सकता है, यह तो तभी सम्भव है कि जब इस पत्रिका के आधार रूप में कोई अद्वितीय युग पुरुष या सिद्धि सम्पन्न व्यक्ति हो, ऐसी साधनाएं और गोपनीय महत्वपूर्ण जानकारियां आपकी पत्रिका ही दे सकती है, मैं जब तक पत्रिका प्रकाशित होती रहेगी, इसका नियमित ग्राहक बना रहूँगा।

लक्ष्मी वल्लभ द्विवेदी, दिल्ली

'सावधान! ग्रहों नक्षत्रों से संकेत आ रहे हैं' और 'आकाश गमन करें' दोनों ही लेख नवम्बर अंक की जान हैं, गोपनीय एवं महत्वपूर्ण हैं, इस प्रकार के लेखों के प्रकाशन के लिए हम सभी पाठक आपके आभारी हैं, हम विश्वास करते हैं कि सन् ८४ के बारह महीनों में भी आप ऐसी ही अद्वितीय साधनाएं, सिद्धियां, जानकारियां और लेख देते रहेंगे, प्रत्येक महीने में मैं अत्यधिक आतुरता के साथ आपकी पत्रिका का इन्तजार करता रहता हूँ।

रमेश चन्द गेवर, भिलाई

यह पत्रिका केवल तन्त्र-मन्त्र ही नहीं हम जैसी गृहस्थ महिलाओं के लिए भी महत्वपूर्ण सामग्री देती है, नवम्बर के अंक में प्रकाशित 'सुखी जीवन के सात स्वर्णिम सूत्र' पढ़कर मैंने उस पर अमल किया है और साल भर से भगड़ते हुए मेरे गृहस्थ जीवन में मधुरता और अनुकूलता आई है, इसके लिए मैं पत्रिका की आभारी हूँ।

अनामिका शर्मा, पूना

साबर साधनाओं के कुछ नये करिश्मे तो नवम्बर अंक की शान है, जो कि प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति के लिए उपयोगी है, मैंने इस में से एक प्रयोग सम्पन्न किया है, और इसमें मुझे पूर्ण सफलता मिली है, सन् १९८४ का पूरा सेट मेरे पास है, और जब जब भी मैं किसी मुसीबत में घिर जाता हूँ, तो इस सेट को खोलकर पढ़ने लगता हूँ, और आप यकीन करिये मुझे कोई न कोई रास्ता मिल जाता है, जिससे कि मैं उस आसन्न विपत्ति से छुटकारा पा लेता हूँ।

प्रद्युम्न भार्गव, लखनऊ।

नवम्बर के अंक के अन्तिम पृष्ठ पर अगले अंक की रूप रेखा पढ़ी, हृदय रोग पर आप लेख देकर बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं, मैंने देखा है, कि आपके यहाँ से प्रकाशित प्रत्येक अंक कीमती और अनमोल है, मैं आगे के वर्ष के लिए भी सदस्य बना रहना चाहता हूँ।

निहार रंजन, हावड़ा

सन् १९८५ के जनवरी विशेषांक अद्भुत आख्यान विशेषांक की रूप रेखा पढ़ी ये लेख अपने आप में मूल्यवान और हीरक मणि की तरह पिरोकर रखने लायक है, आज के इस भीषण महगाई में ७०) रू० क्या मूल्य रखते हैं, केवल ७०) रू० में आप पूरे बारह महीनों तक जो उत्तम कोटि की सामग्री दे रहे हैं, वह तो अपने आप में अद्वितीय है, मैं स्वयं और मेरे सभी मित्र अगले वर्ष का शुल्क भेज रहे हैं, आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने यहां पत्रिका 'मण्डल तैयार कर लिया है, और अगले वर्ष के लिए तीन सौ नये सदस्य बनाये हैं, जिनका शुल्क आपको भिजवा दिया है कृपया ये सभी अंक मेरे पते पर ही भिजवा दिया करें, जिससे कि मैं सुरक्षित रूप से इन सभी को पहुंचा दिया करूंगा।

धनञ्जय वर्मा, प्रयाग

मैं मानव कल्याण सोसायटी का ट्रस्टी हूँ और पूरे भारतवर्ष में हमारे दस हजार से भी ज्यादा सदस्य हैं, मैं तीन हजार पते भिजवा रहा हूँ, और संबंधित पत्रिका शुल्क भी साथ ही साथ ड्राफ्ट से भेज रहा हूँ, कृपया वर्ष भर तक इन सभी को नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहें।

कपिल नारायण खंभातवाला, बम्बई

❀ इसके अलावा भी सैकड़ों पत्र जनवरी विशेषांक की प्रशंसा में प्राप्त हुए हैं, हमने विशेषांक भेजना प्रारम्भ कर दिया है, यह इस वर्ष का अन्तिम अंक है, यदि आपने अभी तक शुल्क नहीं भेजा हो तो लौटती डाक से ही पत्रिका शुल्क भेजने की व्यवस्था करें जिससे कि समय रहते आपको जनवरी का विशेषांक और आगे के सभी अंक नियमित प्राप्त हो सकें।

सम्पादक

नव वर्ष के उपलक्ष में एक अनोखा उपहार

हमसे लीजिये : बिल्कुल मुफ्त : संग्रहणीय उपहार

जी हां ! सन् १९८५-८६ का एक साथ पत्रिका शुल्क १३०) एक सौ तीस रुपये जमा होने पर यह अद्वितीय ग्रन्थ आपको मुफ्त

त्रिजटा अघोरी

सिद्धाश्रम का सिद्ध योगी

लेखक

स्वामी अर्हतानन्द

मूल्य ३०) रु०

समय का फायदा उठाइये ।

.... यहां से काटिये ....

घोषणा

मेरी सदस्य सं......................

मैं सन् १९८५-८६ के लिए पत्रिका सदस्य बने रहना चाहता हूं, आप १३०) रु० दो वर्ष का शुल्क तथा ८) डाक व्यय अर्थात् (१३८) रु. से उपरोक्त उपहार मुझे भेज दें ।

मैं वी. पी. छुड़ाने का वायदा करता हूं/करती हूं । वी. पी. छूटते ही आप मुझे दो वर्ष का पत्रिका सदस्य बनाकर रसीद भेज दें व जनवरी विशेषांक भी भेज दें, आगे के अंक भी दिस. ८६ तक नियमित रूप से भेजते रहें ।

मेरा नाम ....

मेरा पूरा पता ....

.... यहां से काटिये ....

गारन्टी

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र पत्रिका के लिए आपकी खुशी सर्वोपरि है, पत्रिका से यदि आपको पूरा सन्तोष न मिले, तो आप अपनी सदस्यता कभी भी समाप्त कर सकते हैं और अपने बाकी रुपये बिना शिकायत वापिस ले सकते हैं, आपके सन्तोष की यह गारन्टी है ।

सम्पादकीय

सबसे पहले पत्रिका पाठकों को बधाई। इस अंक के साथ पत्रिका अपने चार गौरवपूर्ण वर्ष पूरे कर रही है, इन चार वर्षों में विविध विघ्न बाधाओं एवं संकटों से जूझ कर भी पत्रिका ने अपना महत्व और गौरव अक्षुण्ण रखा है, इसने न सस्ती लोकप्रियता को चाहा और न बाजारू विज्ञापनों से अपना कलेवर भरा, इसके विपरीत पत्रिका ने जितनी ठोस, महत्वपूर्ण और सारगर्भित सामग्री पाठकों को दी, उसकी सराहना आपके पत्रों से ध्वनित है, लगभग सभी पाठकों, यहां तक कि आलोचकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है, कि भारतवर्ष में यह अकेली ऐसी पत्रिका है, जो इतनी गोपनीय महत्वपूर्ण पर प्रामाणिक सामग्री देने में समर्थ है।

और इसका कारण, एक तरफ जहां पत्रिका पाठकों का प्यार और स्नेह है, वहीं पूज्य गुरुदेव का निष्काम निःस्वार्थ ममत्व और आशीर्वाद भी। उनकी ज्ञान गरिमा से मंडित और शुभाशीष से युक्त पत्रिका का प्रत्येक लेख संग्रहणीय है, भावी पीढ़ियों के लिए धरोहर है, ज्ञान का एक अजस्र स्रोत है, जिसमें अवगाहन कर हम तृप्ति अनुभव करते हैं, इसीलिए तो जो भी पाठक इस पत्रिका को पढ़ता है, वह स्वयं तो लाभान्वित होता ही है, अपने इष्ट मित्रों को भी पत्रिका सदस्य बनाने के लिए प्रेरित करता है, और यही हमारा आधार तथा सम्बल है।

अगला वर्ष तो और अधिक महत्वपूर्ण है, हमने सन् १९८५ का प्रत्येक अंक अद्भुत, आश्चर्यजनक एवं विविध गूढ़ शोध से अनुप्रेरित सामग्री से युक्त निकालने का निश्चय किया है, जो श्रेष्ठ हो सर्वथा मौलिक एवं संग्रहणीय हो, हम अपने स्नेही पाठकों साधकों एवं सहयोगियों को पूरा-पूरा विश्वास दिलाते हैं, कि अगले वर्ष के सभी अंक महत्वपूर्ण सामग्री से प्रेरित, लुप्त मन्त्र-तन्त्रों से युक्त संग्रहणीय होंगे।

इसीलिए हम आपको इन पंक्तियों के माध्यम से आह्वान करते हैं, कि आप नये वर्ष का शुल्क शीघ्र ही भेजकर सन् ८५ का विशेषांक तो प्राप्त करें ही, साथ ही अपने इष्ट मित्रों को भी प्रेरित करें कि वे इस पत्रिका के सदस्य बन भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने में सहयोग प्रदान करें।

आपका अपना ही

सम्पादक



त्रिजटा अघोरी

सिद्धाश्रम का सिद्ध योगी

गिरिराजनन्दन

कई वर्षों से मेरे मन में यह साध थी, कि मैं युग पुरुष त्रिजटा अघोरी से मिलूं। मेरी ही नहीं मेरे जैसे कई सन्यासियों, योगियों और साधकों की भी इच्छा ऐसे अद्वितीय युग पुरुष से मिलने की रहती है, सुना था, कि त्रिजटा किसी से भी नहीं मिलता, अधिकतर अपनी ही साधना में रत रहता है, बहुत कम बोलता है, परन्तु यदि कोई बिना पूछे अचानक उसके सामने आ पड़ता है, तो क्रोध से आग बबूला हो जाता है, और उसके क्रोध का सामना करना मेरे बस की तो क्या मेरे जैसे हजार सन्यासी भी मिलकर उसके क्रोध का सामना नहीं कर पाते, हिमालय में विचरण करते हुए कई लोगों से यह भी सुना था कि वह किसी एक स्थान पर टिक कर नहीं रहता, यद्यपि उसका प्रमुख स्थान मसूरी से आगे काफी दूर भैरव पहाड़ी पर है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह उसी स्थान पर मिले, वायु मार्ग से वह कई स्थानों पर विचरण करता रहता है, सिद्धाश्रम में उसका सीधा आना-जाना है, और अघोर साधनाओं का वह इस समय अद्वितीय सिद्ध साधक है, उसने अघोर साधनाओं को एक नया रूप, एक नया आयाम और एक नई दिशा दी है, जिसके माध्यम से ऐसी कई अघोर साधनाएं निर्मित हुई हैं, जिनके द्वारा प्रकृति पर नियन्त्रण करना सहज सम्भव हो सका है।

परन्तु ऐसे युग पुरुष से कहां पर और कैसे मिलना सम्भव हो, यह मानस-मन्थन कई वर्षों से मेरे अन्दर था, मैंने कई उच्च कोटि के योगियों से भी इस सम्बन्ध में अपनी इच्छा प्रकट की तो उन्होंने भी उससे मिलने या मिलाने में असमर्थता ही व्यक्त की, साथ ही साथ बात-चीत के अन्त में मुझे यह सलाह और चेतावनी देना भी नहीं भूले कि वह अघोर साधनाओं का सम्राट है, उससे मिलते समय सावधानी ही बरतना, कोई ऐसी बात न कर बैठना जिससे उसे क्रोध आ जाय।

काफी वर्षों बाद पिछले वर्ष मेरा यह सपना साकार हुआ, मैंने पूज्य गुरुजी श्रीमाली जी से इस सम्बन्ध में अपनी तीव्र इच्छा प्रकट की तो वे हंस कर टाल [illegible] परन्तु साथ ही साथ मेरी धुन [illegible] और [illegible] देखते हुए रास्ता सुझाया कि मैं योगी [illegible]

मिल यूं । वह त्रिजटा अघोरी से मिला देगा, साथ ही साथ मुझे अर्हतानन्द का पता भी दे दिया और दो पंक्तियों का छोटा सा पत्र भी लिख दिया कि मुझे त्रिजटा अघोरी से मिलाने में सहायता करें।

मैं वहां से सीधा अर्हतानंद जी के आश्रम में पहुंचा, उत्तर काशी से आगे अलखनन्दा के किनारे सुनसान स्थान पर उनका आश्रम अत्यन्त भव्य और मनोहर है, वहां जाते ही मन को एक अपूर्व शांति मिलती है, दो दिन के बाद स्वामी जी से मेरी मुलाकात हुई और मैंने दो पंक्तियों में लिखा वह छोटा सा पत्र उनके चरणों में रख दिया, उन्होंने पढ़कर गहराई से मुझे देखा और कहा तुम आश्रम में ही रहो, शीघ्र ही मैं त्रिजटा से सम्पर्क स्थापित

मन्दिर है, वहीं पर आज रात्रि को त्रिजटा अघोरी साधना रत होंगे और वहीं पर उन्होंने मिलने की स्वीकृति दी है।

इन पन्द्रह दिनों में मैंने अनुभव किया कि स्वामी अर्हतानंद तेजस्वी और प्रवीण सिद्धियों के स्वामी हैं, उन्हें कई प्रकार की शक्तियां प्राप्त हैं, और शीघ्र ही वे सिद्धाश्रम में प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे, उनका व्यवहार अत्यन्त मृदु एवं सरल प्रतीत हुआ, बातचीत में उन्होंने मुझे कई नवीन साधनाओं के बारे में जानकारी दी, साथ ही साथ वे संकेत भी दिये जो त्रिजटा अघोरी से मिलते समय ध्यान रखने योग्य थे।

भीमकाय राक्षसवत योगी जिसका शरीर हृष्ट-पुष्ट दीर्घ और विशाल है, जिसकी लम्बी और बलिष्ठ भुजाएं सौ मन के वजन के पत्थर को फूलवत उठाने में समर्थ हैं, पर जो दिल से मुगछौने की तरह कोमल और मृदु है तथा छोटी सी संवेदना पर ही जो बच्चों की तरह सुबक पड़ता है, ऐसे सिद्धाश्रम के सिद्ध योगी त्रिजटा अघोरी ने उस दिन तो कमाल ही कर दिया, जब उसने क्रोध में अपने लम्बे नाखूनों से धरती के सीने को ही फाड़कर रख दिया, आज के युग का एक अनिर्वचनीय, अद्वितीय युग पुरुष का साक्षात्कार दे रहे हैं स्वामी गिरिराजनन्दन जी। एक रोमांचक साक्षात्कार।

कर तुम्हें मिलाने का प्रयत्न करूंगा।

इस आश्रम में रहते हुए मुझे लगभग चौदह-पन्द्रह दिन हो गये, एक दिन सांयकाल स्वामी अर्हतानन्द ने मुझे सूचना दी कि कल त्रिजटा अघोरी से मिलना है, और तुम्हें इसके लिए तैयार रहना चाहिए, हम आज रात को ही यहां से रवाना हो जायेंगे।

रात को भोजन के उपरांत स्वामीजी ने अपने शिष्यों को थोड़ा बहुत मार्गदर्शन दिया और फिर मेरे साथ चलने की ओर चल दिये, कुछ समय तक तो मैं और स्वामी अर्हतानंद पैदल चले उसके बाद एक बस से हमने काफी दूरी तय की, बातचीत में स्वामी जी ने मुझे बताया कि टिहरी से ३२ किलो मीटर आगे काली

टिहरी पर्वतीय प्रदेश का एक सुरम्य शहर है, कोई समय यह राजधानी रहा है, हम बस से टिहरी उतर गये और आगे का रास्ता हमें पैदल पार करना था, वहां से हम दोनों पैदल चले और प्रातःकाल लगभग तीन बजे के आसपास हम उस काली मन्दिर के पास जा पहुंचे जो निर्जन स्थान में एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित था, पहाड़ी के ऊपर चढ़ने का कोई रास्ता या पगडंडी नहीं थी, ऐसा लग रहा था कि कई वर्षों से इस काली की पूजा आसपास के ग्रामवासियों द्वारा नहीं हुई है, भेड़ बकरियों के पैरों से बनी हुई कुछ पगडंडियां अवश्य थीं, पर उनसे ऊपर चढ़ने में कोई सहायता नहीं मिल रही थी, इस कठिन चढ़ाई को चढ़ने के बाद हम दोनों ऊपर पहुंचे तो स्वामी अर्हतानंद शांत थे, जबकि मेरी

श्वास धौंकनी की तरह चल रही थी, कुछ क्षणों तक रुककर मैंने विश्राम किया और जब मैं थोड़ा स्वस्थ संयत हुआ तो मैंने सामने अत्यन्त भव्य,पर जर्जर मन्दिर देखा जो कि काल के थपेड़ों से जीर्ण हो रहा था, हम दोनों ने मन्दिर के गर्भ गृह में आकर मां काली के दर्शन किये, लगभग ?? फीट की यह मूर्ति अत्यन्त ही भव्य और मार्मिक है, गले में नर मुण्डों की माला पहनी हुई एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में ढाल लिये महिषासुर पर पांव रखे हुए यह मूर्ति अपने आप में अत्यन्त ही भव्य आकर्षक और अद्वितीय है, देखते ही शरीर में एक रोमांच और झुरझुरी सी आ जाती है, मैंने एक पांव पर खड़े होकर मां काली का स्तवन किया और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करने की प्रार्थना की।

जब मैं बाहर आया तो एक तरफ स्वामी अद्वैतानंद खड़े थे उन्होंने पूछे काल से महा-मन्दिर के बायें पार्श्व में त्रिजटा अघोरी बैठे हुए हैं, मैंने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया है, अब आगे तुम्हें ही उनसे मिलना है, और बातचीत करनी है।

थोड़ा-थोड़ा प्रकाश होने लगा था, पूर्व दिशा से अरुण का लाल प्रकाश गुलाल की तरह चारों ओर बिखर रहा था, और सभी पेड़ पौधे स्पष्ट दिखाई दे रहे थे, जब बायें पार्श्व की ओर देखा तो एक बहुत बड़ी चट्टान पर आराम से निश्चिन्त मुद्रा लिये एक विशालकाय व्यक्तित्व बैठा था, मैंने अद्वैतानंद की आंखों में झांकना चाहा, उनका इरादा तो स्पष्ट दिखाई दे रहा था, कि वे मुझे त्रिजटा तक ले जायें और मेरा परिचय करवा दें।

स्वामी अद्वैतानंद ने मुझे अपने साथ लिया और मंदिर के बायें पार्श्व की ओर गमन करते हुए त्रिजटा की चट्टान के सामने मुझे ले जाकर खड़ा कर दिया अचानक हम दोनों को वहां देखकर त्रिजटा की त्यौरियां चढ़ गईं और उसके मुंह से 'हूं' निकला, ऐसा लगा कि जैसे क्रोध के आवेग में शेर ने दहाड़ मारी हो, मैंने अनुभव किया कि उस 'हूं' की दहाड़ से ही मेरे घुटनों में कम्पन होने लगा है।

अब मैंने मुड़कर त्रिजटा को देखा, लम्बा चौड़ा विशालकाय व्यक्तित्व लगभग सात फीट से भी ज्यादा चौड़ा बलिष्ठ वक्षस्थल जिस पर काले बाल छितराये हुए थे। कमर और सीने से भी मोटी-मोटी बलिष्ठ भुजाएं, विशाल चेहरा और उस पर आग उगलती सी बड़ी-बड़ी आंखें, सिर पर लम्बी काली जटाएं और पीछे की ओर तीन बंधी हुई जटाओं का समूह ज्यादा नंगे पर ऐसे इस विशाल डीलडौल के व्यक्तित्व को देखते ही मन में दहशत सी पैदा हुई, ऐसा लगा कि यदि इसने जोर से फूंक भी मार दी तो मैं उस वायु के धक्के से निश्चय ही पहाड़ी के नीचे लुढ़क पड़ूंगा क्योंकि मैं जहां पर खड़ा था वह पहाड़ी का एक किनारा ही था, पूरे जीवन में मैंने इतना मजबूत और विशाल व्यक्तित्व और शरीर नहीं देखा होगा, आठ दस बड़े पहलवानों को भी मिलाकर उसका शरीर निर्माण नहीं किया जा सकता, इतना होने पर भी सारा शरीर कसा हुआ, सुडौल, मजबूत और सुदृढ़।

अद्वैतानंद ने अपना परिचय देने के बाद निवेदन किया कि कई वर्षों से इनकी इच्छा आपसे मिलने की थी पूज्य गुरुदेव ने मुझे दो पंक्तियों का पत्र लिखा था कि मैं चलकर इन्हें आपसे मिला दूं, इसीलिए इनको लेकर आपके पास उपस्थित हुआ हूं।

त्रिजटा ने पहली बार मेरी ओर देखा, ऐसा लगा कि जैसे अपनी आंखों से मुझे बींध रहा हो, दोनों आंखों से आग की लपट सी निकलती हुई मैंने अनुभव की, मैं उन आंखों का सामना नहीं कर सका और स्वतः ही जमीन पर 'धम' से बैठ गया, परन्तु दूसरे ही क्षण मैंने अनुभव किया कि यह अवज्ञा होगी, अतः पुनः लड़खड़ाते कदमों से मैं अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ।

त्रिजटा उस विशालकाय पहाड़ी चट्टान से उठ खड़ा हुआ, ऐसा लगा कि बहुत ऊंचा और बलिष्ठ व्यक्तित्व उस पहाड़ी पर खड़ा हो और उसके पैरों के दबाव से वह चट्टान पिस रही हो, उसने झुकके से झुककर हम दोनों - मुझे और अद्वैतानंद को कमर से अपनी मुट्ठी

में पकड़ लिया और दोनों को हवा में ऊपर उठा लिया, जैसे कोई व्यक्ति प्लास्टिक के गुड्डे को अपने हाथ में उठा लेता है, उसी प्रकार से अपना विशालकाय मुट्ठियों से हमारी कमर को पकड़ कर उसने हवा में ऊपर उठा लिया था और हमें उठाये-उठाये ही चट्टान से नीचे कूद कर काली मन्दिर के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया।

इन दो तीन मिनट की क्रिया में ही ऐसा लगा जैसे मेरे कमर की सारी हड्डियां चूर-चूर हो गई हों, एक बार तो ऐसा लगा कि शायद वह हमें उठाकर नीचे खाई में ही न फेंक दे, जब उसने जमीन पर खड़ा किया तो हम दोनों ही लड़खड़ा कर जमीन पर गिर पड़े, दो-तीन मिनट के प्रयास के बाद ही हम पुनः अपने पैरों पर खड़े हो सके।

फिर उसने हमें एक छोटे से पत्थर पर बैठ जाने को कहा और सहेलानन्द से गुरुदेव के बारे में जानकारी चाही, मैंने देखा कि ज्योंही गुरुदेव का स्मरण या उनकी चर्चा होती है तो उसके चेहरे की कठोरता और भयंकरता समाप्त हो जाती है, गुरुदेव के साथ माताजी की चर्चा चलने पर वह कहीं दूर गहराइयों में खो गया, ऐसा लगा कि वह वास्तव में ही उनके प्रति श्रद्धानत है, समर्पित है।

संक्षिप्त सी बातचीत के बाद त्रिजटा ने कहा,—"सूर्य पूर्व में उग आया है, मैं काली का अर्चन करूंगा, आप यहीं बैठे रहें, दो-तीन घण्टे के बाद काली अर्चन के उपरांत आप लोगों से मिलूंगा।"

हमारे सामने ही काली के ठीक सामने एक बड़ा सा पत्थर अपने दोनों हाथों में उठाकर ले आया और रख दिया, मैंने देखा उस पत्थर का वजन सौ डेढ़ सौ मन से कम नहीं होगा, परन्तु उसने उस पत्थर को खिलौने की तरह उठाकर वहां लाकर रख दिया, उस पर अपना व्याघ्र चर्म बिछाया और कुछ विशेष मन्त्र उच्चारण में रत हो गया, उसके मुंह से निकलते हुए शब्दों और ध्वनियों को मैं सुन रहा था, परन्तु मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा था कि यह कौन सी साधना है और यह क्या कर रहा है?

कुछ ही क्षणों में उसने मन्त्रों से ही एक बलिष्ठ जंगली भैंसे को वहां बुलाया, वह जंगली भैंसा चिंघाड़ता हुआ पहाड़ी के नीचे से दौड़कर आता दिखाई दिया, और आकर खड़ा हो गया, दौड़कर आने से उसके नथुनों से सांस जोरों से चल-सा रही थी और मुंह से फेन सा निकल रहा था, ऐसा लगा कि मन्त्रों के जोर से त्रिजटा ने आकर्षण बद्ध कर इस जंगली भैंसे को बलि के लिए बुलाया हो।

मेरा विचार सही निकला, दूसरे ही क्षण त्रिजटा उठ खड़ा हुआ, उस जंगली भैंसे को देखकर हम दोनों उन पत्थरों पर बैठे-बैठे भी थरथरा रहे थे, कि यह विशाल क्रोधित भैंसा यदि हमारी तरफ आ गया तो हमें अपने पैने नुकीले सींगों से उछाल देगा, परन्तु मैंने देखा कि उस भैंसे के सामने त्रिजटा खड़ा हो गया और मन्त्र पढ़ता हुआ उसके पूरे शरीर को वायु के द्वारा पवित्र कर उसकी पीठ को अपने बायें हाथ की मुट्ठी में पकड़ कर हवा में ऊपर उठा लिया, उसके चारों पैर हवा में लड़खड़ा रहे थे और वह व्याकुल घबराया हुआ था मैं तब समझ नहीं पा रहा था कि वह हवा में ही किस प्रकार से लटका हुआ है, क्रोध के मारे वह अपने सींगों को और सिर को उछाल रहा था, परन्तु उसका सारा प्रयत्न व्यर्थ जा रहा था, दो-तीन मिनट मन्त्र पढ़ने के बाद त्रिजटा ने उस भैंसे को जमीन पर खड़ा किया और दाहिने हाथ से उसकी भारी भरकम गर्दन को मरोड़ कर एक ही झटके में धड़ से अलग कर दी, गरम खून का फव्वारा बह निकला, और मैंने देखा कि त्रिजटा ने उसका मुंह काली के चरणों में चढ़ा दिया, और पुनः उसे पीठ के बल ऊपर उठाकर शरीर से निकलते हुए रक्त को गट-गट कर पी गया और शरीर को पहाड़ी से नीचे फेंक दिया।

मैंने जो कुछ देखा वह सर्वथा अप्रत्याशित और आश्चर्ययुक्त था, इतने बड़े बलिष्ठ भैंसे को हवा में उठा

लेना या उसे तोड़ देना अतुलनीय शक्ति का ही परिचय हो सकता है, परन्तु उच्च कोटि की साधक साधनाएं बलिदान से ही सम्पन्न होती होगी, ऐसा सोचकर मैं चुप रहा, फिर उसने पास में ही बहते हुए झरने के नीचे खड़े होकर स्नान किया और एक तरफ पड़े हुए भैंसे के धड़ को और काली के सामने पड़े हुए सिर को उस झरने में नहला कर पवित्र किया, तथा दोनों को परस्पर जोड़कर संजीवनी विद्या से कुछ ही क्षणों में जीवित कर दिया, यह सब कुछ मेरी आंखों के सामने स्पष्ट था और मैं आंखें मसलकर देख रहा था, वह भैंसा सर्वथा जीवित अपने पैरों पर खड़ा था, त्रिजटा के पैरों के प्रहार से बिदक कर भाग खड़ा हुआ और दूसरे ही क्षण पहाड़ों के पीछे ओझल हो गया।

लगभग तीन घण्टों में त्रिजटा ने 'काली स्तवन' सम्पन्न किया और हमारे पास आ बैठा मैंने उनसे प्रार्थना की कि मैं कुछ दिन आपके चरणों में बैठकर कुछ विशेष साधनाएं सीखना चाहता हूं, मेरी बात सुनकर वह कुछ क्षणों तक चुप रहकर फिर संकेत से मना कर दिया उस समय दिन के लगभग ११ बज गये थे, सूर्य सिर पर आ गया था, बातचीत में पता चल गया था, कि शाम को वह अन्य किसी स्थान को चला जायगा, क्योंकि अष्टमी थी, इसीलिए उसने काली स्तवन इस पहाड़ी पर करने का निश्चय किया था, तभी उसका एक शिष्य दर्रे से ऊपर आया और उसके कान में कुछ कहा।

मैंने देखा कि शिष्य की बात सुनकर त्रिजटा क्रोध से लाल भभूका हो गया उसका सारा शरीर भयंकर ज्वाला की तरह हो गया और चेहरा लाल सुर्ख अग्नि की तरह दहकने लग गया, क्रोध में उसने दाहिने हाथ की हथेली को वहीं पृथ्वी पर दे मारा, उसके प्रहार से पृथ्वी की थरथराहट को हम दोनों ने उस पत्थर पर बैठे-बैठे ही अनुभव किया, और दूसरे ही क्षण क्रोध की उन्मत्त अवस्था में अपने नाखून धरती में गड़ा दिये और ताकत से पृथ्वी को फाड़ सा दिया, जहां पर त्रिजटा ने ऐसा किया वहां आठ फीट लम्बी, छः फीट गहरी तथा दो फीट चौड़ी खाई सी बन गई, यह क्रोध की और पराक्रम की आश्चर्य और अविश्वसनीयता है, परन्तु यह सब कुछ मेरी आंखों के सामने मेरे देखते-देखते घटित हुआ है, और हम दोनों इसके साक्षी हैं, व्यक्ति को शायद तम्बू उखाड़ते हुए भी ताकत लगानी पड़ती होगी, परन्तु त्रिजटा ने तो धरती को ही फाड़ कर रख दिया था, यह उसके जैसे बलिष्ठ और अद्वितीय पुरुष से ही सम्भव है।

ऐसा करने पर ही उसका क्रोध कुछ शांत हुआ, पता नहीं क्या बात थी, जिससे उसे इतना क्रोध आ गया था; परन्तु फिर उसने दोनों हाथ झटकते हुए हमारी तरफ देखा और हमारी उपस्थिति अनुभव कर कुछ संकोच से क्षणिक मुस्करा दिया, जैसे उसने अनुभव किया हो कि इन लोगों की उपस्थिति में इतना क्रोध नहीं करना चाहिए था।

झरने के पास जाकर उसने पुनः भरे हाथों को धोया और हमारे पास ही आकर बैठ गया।

उसने मेरी साधना पद्धति के बारे में पूछा और लगभग चार पांच घण्टे हम दोनों से बातें करता रहा, ऐसा लगा कि जैसे यह बिल्कुल दूसरा त्रिजटा हो, अत्यन्त ही मृदु कोमल मधुर और बच्चों की तरह हंसी बिखेरने वाला। वास्तव में ही उसका हृदय अत्यन्त ही स्वच्छ सरल और निश्छल है, जब गुरुदेव निखिलेश्वरानन्द जी के बारे में चर्चा चली तो उसकी आंखों से टप टप आंसू बहने लगे, सुबकते हुए उसने कहा कि मेरा प्रणाम उन्हें कह देना और साथ ही साथ कह देना कि अब बहुत अधिक जुदाई बर्दाश्त नहीं होगी, वह ज्यादा से ज्यादा गुरुदेव के बारे में सुनना चाहता था, और मैंने अनुभव किया था, कि उनके बारे में चर्चा चलने पर वह आत्म विभोर हो उठता है, उसकी आंखें छलछला आती हैं।

चलते समय त्रिजटा ने मुझे और सर्वेशानंद को दो अद्वितीय काली विग्रह दिये जो अपने आप में भव्य और जाग्रत थे, इन चार पांच घण्टों में मैंने अनुभव किया कि वह पूर्ण रूप से गुरुदेव के प्रति समर्पित है, और उसके

एक संकेत पर अपने आपको कला कर देने के लिए उद्यत है, उनकी चर्चा चलने पर सहृ खो सा जाता है, और इसकी इच्छा है, कि वह जीवन का शेष भाग उनके चरणों में ही व्यतीत करे ।

सांझ घिर आई थी, विजडर वहां से चला जाना चाहता था, ऐसे कोमल सहृदय और कहकहे लगाने वाले व्यक्तित्व से बिछुड़ते हुए मुझे गहरा दुःख हो रहा था, फिर भी हम दोनों भारी मन से उठ खड़े हुए उसने हम दोनों को अपने सीने से लगा लिया, और अश्रु भरी आंखों से हमें बिदा दी ।

आज भी मैं उस दिन को उस हृदय को और उसके दोनों रूपों को भूल नहीं पाया हूं, एक तरफ वह वज्र से भी ज्यादा कठोर है, तो दूसरी तरफ पुष्प से भी ज्यादा कोमल और मृदु ।

जो चाहता है, कि मेरा शेष जीवन उसके साथ रहते हुए ही व्यतीत हो जाए परन्तु मेरे ऐसे भाग्य कहां, यह तो कई जन्मों का पुण्य और गुरुदेव की कृपा ही थी, कि एक दिन उनके साथ रहने का सुअवसर प्राप्त हो सका ।

★

दिसम्बर मास के व्रत, पर्व व त्योहार

४-१२-८४	मोक्षदा एकादशी, गीता जयन्ती
६ " "	बारावफात
८ " "	पूर्णमासी व्रत
११ " "	पुष्य नक्षत्र
१८ " "	सफला एकादशी
२० " "	प्रदोष व्रत
२३ " "	नूतन चन्द्र दर्शन
२५ " "	क्रिसमस दिवस
२९ " "	श्री गुरु गोविन्दसिंह जयन्ती ।

काल-गणना

	महेन्द्र	अमृत
रवि		७.३६ से १०.०० प्रातः १२.२४ से २.४८ दोपहर
		राहुकाल- ४.३० से ६.०० सायं
सोम	९.१२ से १०.४८ प्रातः ६.३६ से ९.०० प्रातः	६.०० से ९.१२ प्रातः १.१२ से ३.३६ दोपहर
मंगल	१२.२४ से २.४८ दोपहर	६.०० से ७.३६ प्रातः १०.०० से १०.४८ प्रातः
बुध	६.४८ से ८.२४ प्रातः	८.२४ से ११.३६ दोपहर
		राहुकाल- १२. से १.३० दोपहर
गुरु	५.१२ से ६.०० सायं	६.०० से ६.४८ प्रातः १०.४८ से १२.२४ प्रातः
		राहुकाल- १.३० से ६.०० दोपहर
शुक्र	४.२४ से ६.०० सायं	९.१२ से १०.४८ प्रातः २.०० से ४.२४ दोपहर
		राहुकाल- १०.३० से १२.०० दोपहर
शनि	५.१२ से ६.०० सायं	१०.४८ से २.०० दोपहर
		राहुकाल- ९.०० से १०.३० प्रातः

दिसम्बर १९८४ के लिए

धारावाहिक लेखमाला–७

उड़ती हुई भैरवी और वज्रहन्ता योगी

* स्वामी अरविन्द

पूर्व कथा :–

मैं गोरखपुर जाना चाहता था, मुखर्जी बाबू के फोकर विमान में कुछ ही मिनट उड़ा हुआ था कि वह विमान खराब होकर खेत में गिर पड़ा, हम दोनों किसी प्रकार गोरखपुर पहुंचे, शाम को गोरखनाथ मन्दिर से बाहर निकले ही थे कि उस अंधेरे में एक औघड़ ने मेरा रास्ता रोक लिया और हाथ पकड़ कर जंगल के उस स्थान पर ले गया, जहां कई यज्ञ कुण्ड धधक रहे थे, साधक व साधिकाएं अपनी-अपनी तांत्रिक क्रियाओं में रत थे, औघड़ों ने मिलकर मुझे सर्वथा नग्न कर भैरव की बलि देने के लिए यज्ञ कुण्ड पर लाकर खड़ा कर दिया, औघड़ मेरा सिर काटने ही वाला था कि उस अनिन्द्य सुन्दरी भैरवी ने एकदम से मुझे अलग खींच लिया और प्रमुख औघड़ के सामने तन कर खड़ी हो गयी........

मैंने देखा कि एक क्षण के लिए भैरवी के सिर पर सकुचन हुआ परन्तु दूसरे ही क्षण वह उसी प्रकार से हिम्मत के साथ उस प्रधान औघड़ के सामने डटकर खड़ी रही, बोली–अगर हिम्मत है, तो खड्‌ग चला और मुझे भैरव की बलि दे दे, परन्तु अभी तक तेरी कलाई में इतनी ताकत नहीं आ पाई है, मैं कोई कामपूरा की बनी हुई नहीं हूं, जिससे कि तेरे 'हूं फट्' कहने से ही घबराकर अलग हो जाऊंगी, मैंने जो भी निर्णय लिया है, सोच विचार कर लिया है, जिसे तुम भैरव को बलि देने जा रहे हो वह बलि देने योग्य नहीं है, अपितु भैरव साधक बनाने योग्य है" और ऐसा कहते-कहते वह यज्ञ वेदी के पास से दो कदम पीछे हट गई।

एक स्त्री की खोपरी और प्रधान औघड़ के सामने जबान चलाने यह सब औघड़ों के लिए सर्वथा अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक था, सभी मन में यह सोच रहे थे, कि यह सामने बोलकर बहुत बुरा हुआ, अब जरूर कोई न कोई बीभत्स घटना घटेगी और इस भैरवी का तो अन्त निश्चित है, इसे इसके विनाश से अब कोई रोक नहीं सकता।

औघड़ की भयानक आवाज और तमतमाये हुए चेहरे की ओर मैंने एक क्षण के लिए देखा तो मैं सहम सा रह गया, उसके दाहिने हाथ में खड्‌ग उठा हुआ था, और सारा शरीर गर्म लावे की तरह दहक रहा था, उसकी

जिस भैरवी को साधनाएं सिखाई, जिसे उच्च स्तर की साधनाओं में निपुण किया, जो इन सभी औघड़ और भैरवियों में श्रेष्ठ स्तर पर थी और जो तंत्र के क्षेत्र में बहुत ऊंचे स्तर पर पहुंच गई थी, वही भैरवी विद्रोह कर देगी, एक मामूली से युवक के लिए सारे औघड़ समुदाय से लड़ने के लिए तैयार हो जायगी और उसे ही चुनौती दे देगी, यह उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था।

बड़ी-बड़ी आंखों से क्रोध की ज्वाला फूट रही थी, और उसका चेहरा एक हिंसक क्रूर भेड़िये की तरह हो गया था, जो अपने शिकार को किसी भी प्रकार से समाप्त करने के लिए तैयार हो, उस भीषण माहौल में मेरे जैसे साहसी व्यक्ति की भी टांगें लड़खड़ा रही थी, मैं अपने आपको बहुत सम्भालने का प्रयत्न कर रहा था, कोशिश कर रहा था कि मेरी कमजोरी और मेरा भय मेरी लड़खड़ाती हुई टांगों से भैरवी को पता न चले, परन्तु उस भीषण माहौल में मेरा भय मेरे ऊपर हावी हो रहा था, कोई न कोई अनर्थ अवश्य होगा, और इस अनर्थ में भैरवी की मृत्यु निश्चित है, ऐसा मैं चारों तरफ खड़े औघड़ों के तमतमाये हुए चेहरों और प्रधान औघड़ की आग उगलती हुई आंखों से अनुभव कर रहा था, यह खड्ग जो हवा में ऊपर उठा है, वह बिना कुछ किये वापस अपने स्थान पर नहीं जायगा, यह खड्ग बलि लेने के लिए ऊपर उठा है, यह बलि चाहे मेरी हो और चाहे भैरवी की, बलि लेकर ही यह खड्ग शांत हो सकेगा, यदि मेरी या भैरवी की बलि हो गई तो वास्तव में ही यह एक अनर्थ हो जायगा।

मैंने उसके सीने के पास दुबके हुए ही ऊपर भैरवी की तरफ नजरें उठाकर देखा तो मुझे वहां एक प्रलय ही रूप दृष्टिगोचर हुआ, क्षण भर पहले जो चेहरा अत्यन्त सुन्दर, कमनीय, आकर्षक और लावण्ययुक्त था, वही चेहरा इस समय क्रोध से लाल भभूका हो रहा था, बड़ी-बड़ी आंखें फैलकर रक्ताभ हो गई थी, सिर के बाल बिखर कर मन के उफनते हुए वेग को स्पष्ट कर रहे थे, सारा चेहरा अग्नि कुण्ड की तरह दहक रहा था और दांतों के नीचे दबे हुए होठ को देखकर मैं यह अनुभव कर रहा था कि भैरवी ने मन ही मन कोई निश्चय कर लिया है और उस निश्चय को क्रियान्वित करने के लिए वह कृत संकल्प है।

तभी मैंने देखा कि चारों तरफ औघड़ और भैरवियों का घेरा संकुचित होता जा रहा है, सभी के हाथों में लम्बे-लम्बे फलदार चाकू आ गये हैं, उस चांदनी रात में वे चाकू चमचमा रहे थे, उनकी तेज धार उस चांदनी में भी स्पष्ट दिखाई दे रही थी, मैंने एक क्षण के लिए अनुमान लगा लिया कि ये सभी भैरवी पर टूट पड़ने के लिए आमादा है और प्रधान औघड़ का एक संकेत पाते ही ये सभी औघड़ भूखे भेड़ियों की तरह शिकार पर टूट पड़ेंगे और इस भैरवी के टुकड़े-टुकड़े कर हवा में उछाल देंगे।

धीरे-धीरे यह घेरा छोटे से छोटा होता जा रहा था, सभी के चेहरे भैरवी की अवज्ञा और मुंह फट बोलने की वजह से तमतमा रहे थे, सभी की नजरें औघड़ के चेहरे पर जमी थी और वे उसका संकेत पाने के लिए बेताब से थे, अन्य सभी औघड़ों के मुंह में कुछ-कुछ क्षण के उपरांत जीभ लपलपा आती और अपने ही होठों को चाटकर अन्दर हो जाती, ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सभी कई-कई दिनों से भूखे हैं और इस स्वादिष्ट कोमल

मोक्ष को पाने के लिए और निगल जाने के लिए उतावले से हैं।

अब घेरा बहुत अधिक संकुचित हो गया था, उन औघड़ों की गर्म निकलती हुई सांसें मैं साफ-साफ सुन रहा था, उनके शरीर के तापमय दाह को मैं अपने शरीर पर अनुभव कर रहा था, सभी औघड़ हमसे मुश्किल से दो या तीन फीट की दूरी पर खड़े थे, सभी के हाथों में लम्बे फलदार नुकीले चाकू थे और सभी हिंसक पशुओं की तरह बेताब से लग रहे थे, प्रधान औघड़ अभी भी क्रोध की साक्षात मूर्ति बना अपने स्थान पर खड़ा था, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह भैरवी इस प्रकार से सामने आकर चुनौती दे देगी, और औघड़ों के बीच मुझे कुछ करने के लिए बाध्य कर देगी, मैं उसके मन के अन्तर्द्वन्द्व को समझ रहा था, अब यदि वह कुछ नहीं करता है, इस विद्रोह और अवज्ञा का जवाब नहीं देता है, तो असुरक्षित रहता है, और कल कोई भी औघड़ या भैरवी विद्रोह करने के लिए तैयार हो सकता है, और यदि प्रहार करता है, तो कुछ भी अनर्थ हो सकता है, जिस भैरवी को साधनाएं सिखाई, जिसे उच्च स्तर की साधनाओं में निपुण किया, जो इन सभी औघड़ों और भैरवियों में श्रेष्ठ स्तर पर थी, और जो तन्त्र के क्षेत्र में बहुत ऊंचे स्तर पर पहुंच गई थी, वही मेरे से विद्रोह कर बैठी, एक मामूली से युवक के लिए सारे औघड़ समुदाय से लड़ने के लिए तैयार हो जायगी और ऐसी ही चुनौती दे देगी यह उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था।

वह इस अन्तर्द्वन्द्व में भी उलझा हुआ था, कि यह भैरवी इस समय तक साधना के क्षेत्र में जिस स्तर पर है, वह साधारण स्तर नहीं है, इसने [illegible] की साधनाएं और [illegible] सिद्ध कर रखी हैं, [illegible] में यह कुछ भी कर सकती है, और इन सारे औघड़ों और भैरवियों का मान मर्दन कर सकती है, वह तो [illegible] था, कि इसने [illegible] भैरवी को अप- [illegible] नहीं सिखा दी है, उच्च कोटि की क्रिया,

तभी मैंने देखा कि चारों तरफ औघड़ और भैरवियों का घेरा संकुचित होता जा रहा है, सभी के हाथों में लम्बे-लम्बे फलदार चाकू आ गये हैं और प्रधान औघड़ का एक संकेत पाते ही ये सभी भूखे भेड़ियों की तरह शिकार पर टूट पड़ेंगे और इस भैरवी के टुकड़े-टुकड़े होकर हवा में उछल पड़ेंगे।

सम्मोहन प्रयोग, विद्वेषण प्रयोग, मारण प्रयोग और [illegible] प्रयोग उसे सिखा दिये हैं, क्योंकि भैरवी के प्रति उसके मन में दुर्बलता थी, वह भी [illegible] से भैरवी को चाहता था, अपने हृदय में अत्यन्त गहराई के साथ उसे स्नेह दिया था, और उसकी हर क्षण यही इच्छा रहती कि यह भैरवी संसार की अद्वितीय भैरवी हो। जितना भी उसके पास ज्ञान और साधनाएं थीं, वह जल्दी से जल्दी उस भैरवी को दे देना चाहता था, वह चाहता था कि भैरवी मेरी प्रमुख शिष्या और अद्वितीय साधिका बने, उसके संकेत पर सारी प्रकृति नर्तन करे, उसके इंगित पर सारा विश्व अपने [illegible] जो अत्यन्त गूढ़, गुप्त, महत्वपूर्ण और रहस्यमय साधनाएं थीं, वे भी उस भैरवी को सिखा दी थीं, अन्य औघड़ या भैरवियां जब किसी स्तर पर पहुंचती और आगे सीखने की जिज्ञासा करती तो प्रधान औघड़ उन्हें कुछ दिनों के लिए टाल देता, परन्तु इस भैरवी ने जब भी चाहा जिस प्रकार से भी चाहा उसे सिखाया, यही नहीं अपितु स्वयं रात रात भर जागकर उसे साधना में अद्वितीय बनाया, वह चाहता था, कि अन्य औघड़ और इस भैरवी में बहुत अधिक अन्तर हो वह इतनी अधिक आगे बढ़ जाय कि सारे औघड़ इसके

चारों तरफ
का घेरा
, सभी के
ार चाकू
औघड़ का
भी भूखे
पर टूट
े टुकड़े-
ड़ेंगे ।

मैंने देखा कि उसने अपना दाहिना हाथ हवा में ऊपर उठाया ऊपर उठाते ही उसकी मुट्ठी में पीले-पीले से कुछ दाने आये और हुं फट् कहते ही उसने वे दाने अपने चारों ओर बिखेर दिये, दाने बिखरते ही ऐसा लगा मानों एक साथ सैंकड़ों बम फट पड़े हों।

सामने बौने से लगे, और वह इन सभी औघड़ों और भैरवियों पर अपनी साधना के बल पर राज्य करे।

और उसने यह तय किया भी। अपनी शक्ति अपनी सामर्थ्य और अपनी साधना का बल दे कर भी इस भैरवी को योग्य बनाया, उच्च कोटि की साधनाओं से सम्पन्न किया, षोडशोपचार मारक-तारक शक्तियों से परिचित कराया, इस भैरवी के लिये आकाश गमन, और जल गमन एक साधारण प्रक्रिया है, वह एक क्षण के सौवें हिस्से में विश्व के किसी भी कोने में जा सकती है, और यदि चाहे तो अपनी शक्ति और साधना के बल पर पहाड़ को मिट्टी की ढेरी में बदलने की सामर्थ्य रखती है, इस समय वह जिस साधना में रत थी, वह तो विश्व की अद्वितीय साधना थी, यह एकमात्र ऐसी साधना थी, जो मात्र प्रधान औघड़ को ही ज्ञात थी, इस साधना को भी औघड़ ने अपनी इस प्रिय शिष्या को सिखा दिया था, और सिद्ध करा दिया था, इस साधना के बल पर तो वह पूरे विश्व में तहलका मचा सकती है, यदि अपने पर आ ही जाय तो वह कुछ भी कर सकती है।

अन्य औघड़ इसलिए तमतमा रहे थे, कि उन्हें इस भैरवी की साधनाओं के बारे में सही-सही जानकारी नहीं थी, वे तो यही समझ रहे थे, कि हमारे पास जो साधनाएं हैं, वे ही साधनाएं इसके पास भी हैं, परन्तु प्रधान औघड़ जानता था, कि ये औघड़ और भैरवियां अंधेरे में हैं, मात्र उसे ही पता है, कि यह भैरवी कितनी अधिक साधना सम्पन्न एवं शक्ति सम्पन्न है, इसीलिए वह कुछ करने से पहले अन्तर्द्वन्द्व में उलझा हुआ था।

परन्तु कुछ न कुछ तो करना ही था और यदि कुछ नहीं किया तो अनुशासन भंग होता है, फलस्वरूप कल कोई किसी की बात नहीं मानेगा, परन्तु यदि कुछ किया जाता है, तो सर्वनाश निश्चित है, यह एक ऐसा कठोर और यथार्थ अन्तर्द्वन्द्व था जिसका सामना प्रधान औघड़ को करना पड़ रहा था, और वह समझ रहा था, कि इसी वजह से यह भैरवी निर्भीक और सिंहनी की तरह सामने डटकर खड़ी है।

तभी उस धक्का पेली में संकुचित हुए घेरे में किसी एक औघड़ का शरीर भैरवी से टकरा गया, भैरवी ने खा जाने वाली नजरों से उस औघड़ को ताका; उसने देखा कि सारे औघड़ और भैरवियां रक्त पिपासु बनी उसके चारों ओर खड़ी हैं, और यदि उसने एक आध क्षण में ही कोई ठोस निर्णय नहीं लिया तो अनर्थ हो सकता है और ऐसा निश्चय करते ही भैरवी ने झपटा प्रयोग कर दिया, मुझे आज भी ये पंक्तियां लिखते समय भी भैरवी के मुख से निकलते हुए शब्दों का पूरा-पूरा स्मरण है।

ॐ काली कंकाली किलकिले क्लीं रक्त कंबले महादेवी मृतक मुत्थापय चालय चालय पर्वतां कम्पय नीजय हुं हुं भूतनाथाय भूतेश्वराय अज किकिरोद्गम कंकाली महाकाली केलि कलाभ्यां हुं हुं ॥

आगे के और भी शब्द उसके होठों से निसृत हो र थे और मैंने देखा कि उसने अपना दाहिना हाथ हवा ऊपर उठाया, ऊपर उठाते ही उसकी मुट्ठी में पीले-पी से कुछ दाने आये और 'हुं फट्' कहते ही उसने वे दा

अपने चारों ओर बिखेर दिये, दाने बिखेरते ही ऐसा लगा मानो एक साथ सैकड़ों बम फट पड़े हों, शोरों की आवाज होने से कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था, चारों तरफ घिरे हुए औघड़ और भैरवियां छितरा गये थे, प्रधान औघड़ इस आकस्मिक और अप्रत्याशित कृत्य से भौचक्का सा हो गया था, कृत्या के प्रयोग से उसके हाथ का खड्ग छिटक कर चार पांच फीट दूर जा गिरा था, उसका सारा शरीर कृत्या के प्रहार से थरथरा रहा था, यद्यपि बाकी सारे औघड़ और भैरवियां तिनकों की तरह उछल कर दूर औंधे मुंह जा गिरे थे, परन्तु प्रधान औघड़ इस कृत्या प्रहार को झेल गया था, यद्यपि इस प्रकार से उसका सारा शरीर कंपित हो गया था इस समय भी उसके शरीर की थरथराहट मैं अनुभव कर रहा था, उसके घुटनों पर जो कम्पन था, उसको मैं भली प्रकार से देख रहा था, परन्तु फिर भी प्रधान औघड़ साधना सम्पन्न था, यद्यपि उसके हाथ का खड्ग अवश्य ही छिटक कर दूर जा गिरा था, यद्यपि उसका शरीर उन भीषण प्रहार से थरथरा गया था, फिर भी उसके पांव मजबूती से एक जगह पर जमे थे, यह अनुमान नहीं लगा पा रहा था कि वह मेरी हारों पर या पड़ने पर कृत्या का प्रयोग तक कर देगा।

परन्तु अब तो तीर कमान से छूट गया था, अब तो बराबरी की बात थी, एक दूसरे को ललकारने और युद्ध में भिड़ जाने की बात थी, अब किसी प्रकार से न्यूनता नहीं रखनी है क्रोध की उन्मत्त अवस्था में प्रधान औघड़ ने दोनों हाथ हवा में लहराये और एक क्षण के अन्तराल में ही उसकी दोनों मुट्ठियां काले दानों से भर गई, शायद उन मुट्ठियों में काली मिरच या ऐसी ही कोई वस्तु रही होगी और मन्त्र बुदबुदाते हुए प्रधान औघड़ ने उन बीजों को भैरवों के सामने ही जमीन पर पटक दिया, पटकते ही भयानक विस्फोट हुआ, जैसे कि सारी धरती ही फट जायगी, ऐसा लगा कि मेरे पैरों के पास परमाणु बम का विस्फोट हुआ हो, यह 'मृत्यु बाण' प्रयोग था, जो कि अपने आप में भीषण और कठिन कहा जाता है। (क्रमशः)

अनमोल सूक्तियां

★

१– दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करने की एक ही रीति है, कि उसकी रुचि के विषय पर बातचीत प्रारम्भ करें और उसकी जो आवश्यकता है, उसे प्राप्त करने की विधि बतायें।

२– प्रत्येक व्यक्ति अपना नाम सम्मान के साथ सुनकर प्रसन्न होता है।

३– किसी से कोई काम कराने का संसार में केवल एक ही उपाय है और वह है दूसरे मनुष्य को उस काम को करने की आवश्यकता का अनुभव कराना।

४– प्यार दबे पांव आता है और दरवाजा खड़खड़ाता हुआ जाता है।

५– जवानी– वह समय, जब आप अपनी हर मुसीबत का कारण मां बाप को समझें, बुढ़ापा– वह उम्र जब हर घटना को नौजवानों का कसूर कहें।

६– आशावादी होने में क्या तकलीफ है, हो तो हम किसी भी समय सकते हैं।

७– बच्चे को अपने पैरों पर खड़ा होकर अपनी राह स्वयं बनाने देना ही उसके लिए सबसे अच्छी बपौती है।

८– अगर आपके पास ज्ञान है तो दूसरों को उससे अपने दीपक आलोकित कर लेने दीजिये।

९– आज के मां बाप और बच्चों के बीच एक नई गलतफहमी पैदा हो गई है – अब यह तय करना मुश्किल है कि कौन पीढ़ी किसे सिखा रही है।

चन्द्रमा

आपके मनोभावों पर नियंत्रण कर रहा है

स्वामी हरिहरानन्द

सही अर्थों में देखा जाय तो व्यक्ति अपने आप में पूर्ण स्वतन्त्र नहीं है, अपितु उस पर ब्रह्माण्ड में होने वाली हलचलों और ग्रहों, नक्षत्रों के परस्पर आकर्षण और विकर्षण का प्रभाव उस पर पड़ता है, जन्म से लगाकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य एक विशेष परिधि में आबद्ध रहता है उसकी गति उस परिधि से बाहर नहीं जा पाती, इसका कारण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति पर, वह चाहे बालक हो या वृद्ध व्यक्ति, वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, प्रत्येक पर इन ग्रहों का प्रभाव बराबर पड़ता रहता है, इसलिए इनके स्वभाव, प्रकृति और विचार परस्पर अलग अलग होते हैं।

यह आवश्यक नहीं कि पिता पुत्र के विचार एक समान हों, यह भी आवश्यक नहीं कि पिता के व्यक्तित्व का निर्माण जिस प्रकार से हुआ है, उसी प्रकार पुत्र के व्यक्तित्व का भी निर्माण हो, कई बार तो सर्वथा विपरीत व्यक्तित्व एक दूसरे के होते देखे गये हैं, पिता बहुत धार्मिक सहृदय और भला है, परन्तु उसका पुत्र उतना ही दुराचारी, व्यसनी और कुकर्मी हो जाता है, इसका कारण उन दोनों पर पड़ने वाले ग्रहों के अलग-अलग प्रभाव हैं।

चन्द्रमा पृथ्वी का सबसे निकटतम ग्रह है और इस ग्रह का सबसे अधिक प्रभाव पृथ्वी पर और पृथ्वी वासियों पर पड़ता है, अगर सही रूप में कहा जाय तो यह पूरी पृथ्वी चन्द्रमा के प्रभाव को लिए हुए गतिशील है, प्रत्येक मानव पर चन्द्रमा का सर्वाधिक प्रभाव रहता ही है।

मनोभावों पर प्रभाव

चन्द्रमा का प्रभाव तरल पदार्थों पर और विशेषकर समुद्र पर पड़ता है, इसीलिए चन्द्रमा की गतिविधि के अनुसार ज्वार-भाटा बराबर आता रहता है, इस ज्वार में कभी-कभी तो समुद्र की लहरें तीस चालीस फीट ऊंची हो जाती हैं और समुद्र अपनी निर्धारित सीमा से तीस चालीस गज आगे तक बढ़ जाता है, परन्तु निर्धारित समय के बाद वह धीरे-धीरे हटने लगता है और अपनी सीमा में वापस आ जाता है, वैज्ञानिक इस बात को

स्वीकार करते हैं कि समुद्र पर चन्द्रमा का सर्वाधिक प्रभाव है और पूर्णमासी के दिन जब चन्द्रमा पूर्ण होता है, इसका प्रभाव धरती पर तथा समुद्र पर सर्वाधिक होता है, इसीलिए वह गुरुत्वाकर्षण आकर्षण के फलस्वरूप समुद्र में हलचल पैदा कर देता है, जिसकी वजह से ज्वार आ जाता है।

यद्यपि इन समुद्र पर और पृथ्वी पर अन्य ग्रहों का प्रभाव भी थोड़े बहुत रूप में पड़ता अवश्य है, परन्तु अन्य ग्रह पृथ्वी से बहुत अधिक दूर होने की वजह से उनका प्रभाव न्यून होता है, जो कि सामान्य रूप से दृष्टिगोचर नहीं होता।

इसका तात्पर्य यह नहीं है, कि उनका प्रभाव पड़ता ही नहीं है, परन्तु इसका तात्पर्य यह है, कि उनके प्रभाव को हम सहज सामान्य रूप से आंक नहीं सकते, परन्तु यदि ज्योतिष का अध्ययन करें तो चन्द्रमा के अलावा अन्य ग्रहों के प्रभाव का भी अध्ययन हो सकता है।

समुद्र के समान मानव का शरीर

वैज्ञानिकों ने परीक्षणों के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि समुद्र और मानव का शरीर एक समान है, समुद्र में जितना नमक, क्षार और अन्य तत्व जिस अनुपात में है ठीक उसी अनुपात में मानव के शरीर में भी इन तत्वों की प्रधानता है, मानव के शरीर में अस्सी प्रतिशत पानी है, बाकी बीस प्रतिशत भाग में हड्डियां, मांस, नाड़ियाँ आदि हैं, इस अस्सी प्रतिशत पानी में भी ठीक उसी अनुपात में तत्व है, जिस अनुपात में समुद्र में तत्व है, इन दोनों में मूल भूत रूप से कोई अन्तर नहीं, अब यदि चन्द्रमा के प्रभाव से समुद्र में ज्वार आता है, और उसकी लहरें चालीस पचास फीट ऊपर उठ जाती है, तो उस चन्द्रमा का मनुष्य के शरीर पर भी उसी प्रकार से प्रभाव पड़ता है, और उसके शरीर में हलचल उसी प्रकार से व्याप्त हो जाती है।

पूर्णमासी का दिन सबसे खतरनाक

भारत सरकार के आंकड़े इस बात के गवाह हैं, कि मानव मस्तिष्क में तूफान हलचल, और घात-प्रतिघात की दृष्टि से पूर्णमासी का दिन सबसे अधिक खतरनाक होता है, पुलिस के महानिदेशक त्रिवेदी जी ने पिछले दस वर्ष के आंकड़ों का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि देश में सर्वाधिक हत्याएं बलात्कार और लूटमार पूर्णमासी के दिन होती है, इस दिन अपराधी प्रवृत्ति वाले व्यक्ति अपने नियन्त्रण में नहीं रहते और वे इतने अधिक उत्तेजित हो जाते हैं, कि उनका सारा ध्यान हत्या और लूटमार की तरफ हो जाता है, पिछले एक वर्ष के आंकड़े यदि हम देखें तो ज्ञात होगा कि अमावस्या के दिन सबसे कम चोरियां, बलात्कार और हत्याएं होती हैं, जबकि पूर्णमासी के दिन इसका अनुपात सबसे अधिक होता है।

इन आंकड़ों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा का प्रभाव जिस प्रकार से समुद्र पर होता है, उसी प्रकार से मानव पर भी पड़ता है और वह ज्यादा उत्तेजित हो जाने की वजह से इस प्रकार के कार्य कर बैठता है, जो समाज की दृष्टि से उचित एवं मान्य नहीं होते।

पागलखानों के अधीक्षकों की राय है कि पूर्णमासी के दिन पागल बहुत अधिक चिल्लाते, चीखते और लोहे की सलाखों से अपना सिर फोड़ लेते हैं, उस दिन ऐसा क्या हो जाता है कि वे अपने नियंत्रण में नहीं रहते; इसलिए पागलखानों में पूर्णमासी के एक दिन पहले और पूर्णमासी के एक दिन बाद तक किसी कर्मचारी को छुट्टी नहीं दी जाती, क्योंकि उन दिनों में पागलों को नियंत्रित करने के लिए बहुत अधिक स्टाफ की जरूरत पड़ती है और इसीलिए उन्हें छुट्टी नहीं दी जाती।

अमरिका के प्रसिद्ध शहर मियामी के मनोरोग चिकित्सक आर्नल्ड एल लीबर ने कई वर्षों के गहन अध्ययन के बाद निष्कर्ष निकाला कि चन्द्रमा की कलाओं के घटने बढ़ने का मनुष्य की आक्रामक प्रवृत्ति से गहरा सम्बन्ध है, खास तौर पर शराबियों व्यसन करने वाले, दुर्घटना करने वाले, अपराधी और मानसिक रूप से

अस्थिर व्यक्तियों के व्यवहार पर चंद्रमा की कलाओं का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, इस वजह से इस दिन ऐसे व्यक्ति अपने नियंत्रण में नहीं रह पाते और ऐसे कार्य कर बैठते है जो समाज की दृष्टि से उपयोगी और अनुकूल नहीं कहे जा सकते ।

लीबर ने चन्द्रमा की कलाओं का मानव शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का गहराई के साथ अध्ययन किया है, उन्होंने ग्रहों का अध्ययन करने के बाद अनुभव किया कि ८ सितम्बर १९७० में सूर्य पृथ्वी और चंद्रमा एक ही सीध में आ रहे है, तब उन्होंने मियामी के पुलिस विभाग, समाचार पत्रों और अस्पताल के मनोरोग आपातकालीन कक्ष को सावधान कर दिया कि ८ सितम्बर को मनुष्यों का व्यवहार असामान्य हो जायगा, अतः ज्यादा कार्य करना पड़ सकता है ।

लीबर ने अपनी पुस्तक में आगे लिखा है, कि उस दिन तो आफत ही आ गई, इस एक दिन में मियामी में इतनी अधिक हत्याएं, लूटमार और बलात्कार के केस हुए जितने पिछले तीन महीनों में भी नहीं हुए थे, इन अपराधों के अलावा इस दिन ऐसे अनेक अपराध हुए जिनका कोई औचित्य या उद्देश्य नहीं था ।

इस निष्कर्ष से यह सिद्धांत अपने आप में स्पष्ट होता है, कि चंद्रमा का प्रभाव मनुष्य के शरीर और उसके मस्तिष्क पर अवश्य पड़ता है, चंद्रमा का प्रभाव ज्यादा होने के कारणों से शिथिल मस्तिष्क वाले ऐसी स्थिति में कुछ ऐसे कार्य कर बैठते हैं, जो वे नहीं चाहते ।

अमेरिका के ही मनोरोग चिकित्सक डा० लीबर ने हजार से भी अधिक मानसिक रोगियों का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि पागल व्यक्ति का एक चक्र तीस दिन में पूरा होता है, और कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्लपक्ष में वे ज्यादा उत्तेजित और आक्रामक हो जाते है, इसका कारण चन्द्रमा का सीधा प्रभाव है और चन्द्रमा की कलाओं के साथ ही उनकी उत्तेजना पर भी प्रभाव पड़ता है ।

भारत के वैज्ञानिक स्वामी दास ने पिछले आठ वर्षों के अध्ययन के बाद जो निष्कर्ष निकाले है, वे इस प्रकार है-

१- पूरे भारतवर्ष में पूर्णिमा की रात को दमकल विभाग में आग बुझाने के लिए पच्चीस तीस टेलिफोन अधिक आते हैं ।

२- अस्पताल में मनोरोग से सम्बन्धित रोगी पूर्णमासी के दिन अकारण ही चीखने चिल्लाने लग जाते हैं ।

३- पूर्णमासी के दिन मासिक धर्म के रक्त के तीव्र प्रवाह की वजह से स्त्रियां अत्यधिक बेचैन और अस्थिर रहती हैं तथा छोटी-छोटी बातों पर वे झुंझला जाती हैं ।

४- छोटा मोटा अपराधी भी पूर्णमासी के दिन बिना किसी कारण के मारपीट लड़ाई झगड़ा या हत्या कर बैठता है, जिसका कोई विशेष औचित्य नहीं होता ।

५- पूर्णमासी के दिन प्रत्येक व्यक्ति जरूरत से ज्यादा तनाव में रहता है ।

६- पूर्णमासी के दिन पाचन शक्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और इस दिन मस्तिष्क से सम्बन्धित तथा पेट से सम्बन्धित रोगी अस्पताल में ज्यादा आते हैं ।

चन्द्रमा का हमारे शरीर के द्रव पदार्थों और स्नायु

तन्त्र पर विशेष रूप से पड़ता है, जिसकी वजह से हम सभी थोड़े बहुत रूप में उत्तेजित और आक्रामक हो उठते हैं, यह प्रभाव हमारे आन्तरिक और बाह्य दोनों ही रूपों में पड़ता है, जिसकी वजह से हम बेचैन हो उठते हैं, रात को नींद मुश्किल से आती है या अचानक हृदय की धड़कन तेज होकर शरीर पसीने से भीग जाता है।

वस्तुतः जीवन एक गति है, यद्यपि समुद्र की एक बूंद को पूर्णमासी के दिन हाथ में लेकर देखें तो उसमें हलचल नहीं दिखाई देगी, पर समुद्र में वह हलचल पूर्ण रूप से दिखाई देती है, इसी प्रकार पूर्णमासी के दिन इस गतिशील शरीर पर भी उसका प्रभाव विशेष रूप से होने के कारण हमारा जीवन अव्यवस्थित और असंतुलित हो जाता है, यह शरीर एक प्रकार से लघु सागर है और इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि हमारे शरीर और हमारे मनोभावों का नियंत्रण चन्द्रमा के द्वारा ही होता है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार जो मानसिक रूप से कमजोर हों या जो चन्द्रमा की वजह से उत्तेजित हो उठते हों, उन्हें चाहिए कि वे उत्तम कोटि का मोती कनिष्ठ उंगली में धारण किये रहें, जिससे कि चन्द्रमा का परावर्तन हो सके और मानव सामान्यतः अनुकूल एवं नियमित रह सके।

काल-गणना

महेन्द्र — अमृत

रवि
७.३६ से १०.०० प्रातः
१२.२४ से २.४८ दोपहर
राहुकाल- ४.३० से ६.०० सायं

सोम ९.१२ से १०.४८ प्रातः ६.०० से ९.१२ प्रातः
६.३६ से ९.०० प्रातः ६.१२ से ११.३६ दोपहर

मंगल १२.२४ से २.४८ दोपहर ६.०० से ७.३६ प्रातः
१०.०० से १०.४८ प्रातः

बुध ६.४८ से ८.२४ प्रातः ८.२४ से ११.३६ दोपहर
राहुकाल- १२. से १.३० दोपहर

गुरु
६.०० से ६.४८ प्रातः
१०.४८ से १२.२४ दोपहर
राहुकाल- १.३० से ३.०० दोपहर

शुक्र ४.२४ से ६.०० सायं ९.१२ से १०.४८ प्रातः
१.०० से ४.२४ दोपहर
राहुकाल- १०.३० से १२.०० दोपहर

शनि ५.१२ से ६.०० सायं १०.४८ से २.०० दोपहर
राहुकाल- ९.०० से १०.३० प्रातः

दिसम्बर १९८४ के लिए

* **चिकित्सा**

हृदय रोग पर पूर्ण विजय

चिकित्सा-टेक्नोलोजी और विश्व की अत्याधुनिक दवाइयों के बावजूद भी आयुर्वेद ने अपने प्रभाव से इस घातक रोग से पीड़ित करोड़ों लोगों को दीर्घ और उत्साहपूर्ण जीवन बिताने की आस जगाई है

* स्वामी गणेशानंद

आज विश्व की टेक्नोलोजी और चिकित्सा विज्ञान बहुत अधिक आगे बढ़ गया है, आज से दस वर्ष पहले खराब हृदय पर स्वस्थ हृदय का प्रतिरोपण एक आश्चर्यजनक घटना मानी गई थी, और इसने चिकित्सा क्षेत्र में एक अभूतपूर्व क्रांति ला दी थी, परन्तु इससे व्यक्ति को तीन चार वर्ष तक की जिन्दगी तो दी जा सकी, परन्तु लम्बे समय तक उसको पूर्ण स्वस्थ हृदय प्रदान करना सम्भव नहीं रहा, इसी प्रकार पेसमेकर के प्रभाव से भी हृदय रोगियों को अनुकूलता प्राप्त हुई, अब तो चिकित्सा विज्ञान और अधिक आगे बढ़ गया है, और उसने प्लास्टिक के ऐसे शुद्ध हृदय बनाये हैं, और उनका सफलतापूर्वक प्रतिरोपण कर सिद्ध कर दिया है, कि इस प्रकार हृदय का प्रतिरोपण स्वास्थ्य के लिए और पूर्ण आयु प्राप्त करने के लिए सर्वाधिक उपयोगी है।

यदि ये उन्नति के उपाय नहीं होते और जो हृदय से संबंधित नई से नई खोज हुई है, यह सब कुछ नहीं होता तो आज जो लाखों लोग जिन्दा है, वे कई साल पहले ही मर चुके होते अथवा हृदय के भयानक दर्द या उसकी दूसरी बीमारियों से कमजोर और निकम्मे हो गये होते।

आज इलैक्ट्रो कार्डियोग्राम (ई सी जी) के द्वारा बराबर रोगियों की हृदय दशा पर ध्यान रखा जाता है, और यह ज्ञात किया जाता है, कि कहीं रक्त संवाहक धमनियों में खून का थक्का तो नहीं जम गया है, या रक्त प्रवाह में कोई बाधा तो नहीं आ रही है, जो रोगी अस्पताल में भर्ती नहीं होते, वे अपने घर में 'होल्टर मानीटर' की मदद से ज्ञात कर सकते है, कि पिछले २४ घण्टों में हृदय किस प्रकार से काम कर रहा है, और उस पर किस प्रकार का दबाव या प्रतिरोध पड़ रहा है।

सबसे बड़ी समस्या अभी तक यह रही कि हृदय के कार्य और खून के पम्पिंग का सही प्रकार से ज्ञान नहीं हो रहा था, यह पता नहीं चल पा रहा था, कि हृदय पर दबाव या बोझ किस कारण से बढ़ रहा है, परन्तु अब ऐसी ट्यूब बनाने में सफलता प्राप्त हुई है, जिनके माध्यम से हृदय के कार्य, उस पर पड़ने वाले रक्त के

हृदय रोग और आयुर्वेद

६, ७, ८ अप्रैल ८४ को बम्बई में विश्व हृदय रोग सम्मेलन हुआ, जिसमें आधुनिक चिकित्सा प्रणाली पर विचार किया गया, विश्व के लगभग सभी हृदय रोग विशेषज्ञों ने दो आयुर्वेदिक औषधियों की प्रशंसा की. एक तो यह कि आंवला हृदय रोग के रोगियों के लिए प्राण-दायक है, यह खून में जमने वाले 'कोलेस्ट्रोल' के स्तर को कम करता है. इसे अचार या चटनी के रूप में खाया जा सकता है, यदि नित्य आंवले का सेवन किया जाय तो निश्चित रूप से खून में थक्के नहीं जमते और चार पांच सप्ताह में ही जांच करने पर पाया जाता है कि कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम हुई है।

दूसरे एक 'गुग्गुलसार' है, जिसकी बूंदें यदि नाक में चार हफ्ते तक बराबर डाली जाय, तो इससे रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा कम हो जाती है और दिल का दौरा नहीं पड़ता।

हृदय और धमनियों आदि के बारे में पूरी-पूरी जानकारी मिल जाती है, इसे 'कोरोनरी एन्जियोग्राफी' कहते हैं, इसके माध्यम से एक विशेष रंग, खून में मिला दिया जाता है, और फिर वह रंग खून हृदय की रक्त-नाड़ियों में से बाहर निकलता है, तो उन सब का एक्सरे फोटो ले लिया जाता है, और इससे पता चल जाता है, कि रक्त कहां रुक रहा है, और उसका कारण क्या है ?

अभी तक हृदय की धड़कनों का सही फोटो प्राप्त करना सम्भव नहीं था, इसलिए रक्त के प्रवाह और पम्पिंग का अध्ययन भली प्रकार से नहीं हो रहा था, पर अब 'कम्प्यूटराइज्ड एक्सीयल टोमोग्राफी' के माध्यम से इस समस्या पर विजय प्राप्त कर ली गई है, इससे हृदय के प्रत्येक भाग को आसानी से देखा जा सकता है, बम्बई के बॉम्बे हॉस्पिटल तथा जसलोक अस्पताल में इस प्रकार की अत्याधुनिक टेक्नोलोजी का प्रयोग किया जाता है, और इसके माध्यम से लाखों लोगों के हृदय रोगों का ज्ञान किया जा सका है।

रोग से सम्बन्धित दवा

अभी तक चिकित्सक हृदय रोग के रोगियों को सलाह देते थे, कि वे 'डिजिटेलिस अथवा डाइयूरेटिक' जैसी दवाइयां लें, डिजिटेलिस से हृदय की पम्प क्रिया मजबूत होती है, और रक्त का प्रवाह बराबर हो जाने की वजह से हृदय पर दबाव कम पड़ता है, इसी प्रकार डाइयूरेटिक पेशाब बढ़ाने वाली दवा है, इसके सेवन से शरीर में से व्यर्थ का पानी निकल जाता है, फल-स्वरूप खून की मात्रा कम हो जाती है, क्योंकि खून की मात्रा अधिक होने की वजह से भी हृदय को ज्यादा कार्य करना पड़ता है, और इस दवा के सेवन से खून न्यूनता हो जाने की वजह से हृदय को आराम अनुभव होता है।

जो हृदय रोग के रोगी हैं, वे ये दोनों दवाएं अपने घर में बराबर रखते हैं, और उपयोग करते हैं, परन्तु अब इससे भी श्रेष्ठ हृदय रोग से सम्बन्धित औषधि तैयार हुई है, जिसका नाम 'केपटोप्रिल' है, यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ औषधि है और आजकल इसका प्रयोग अधिक से अधिक होने लगा है, इससे हृदय की गति नियमित होती है, और रक्त की मात्रा कम होने लगती है, साथ ही साथ शरीर का सारा फालतू पानी पेशाब के रास्ते से बाहर निकल जाता है, और हृदय पर अनावश्यक दबाव नहीं रहता।

कई बार हृदय की गति में अनियमितता आ जाती है, या वह जोर-जोर से धड़कने लग जाता है, कई बार हृदय के स्थान पर बहुत जोरों से दर्द उठता है, और रोगी बेचैन हो उठता है, यदि उसी समय उसको कोई औषधि नहीं दी जाय, तो रोगी की मृत्यु होने की पूरी-

सम्भावना हो जाती है, ऐसे समय के लिए एक नई 'ग्लीसेरोट्रील' दवा बनी है, जो कि अद्भुत और आश्चर्यजनक है, भारतवर्ष में अब यह दवा आसानी से उपलब्ध है, जब तक डाक्टरी इलाज उपलब्ध न हो, तब तक के लिए यह दवा व्यक्ति को जिन्दा रखने में समर्थ है।

यदि रक्त क्रिया व्यवस्थित नहीं हो या रक्त पर अनावश्यक दबाव पड़ रहा हो, तो ऐसे समय में दिल का दौरा पड़ जाता है, यदि कुछ मिनट बीत जाय, और उसका समुचित उपाय न हो तो हृदय की धमनी फट जाती है, और व्यक्ति की तत्काल मृत्यु हो जाती है, पर आधुनिक विज्ञान ने 'स्ट्रेप्टोकिनासे' जैसी आश्चर्यजनक दवा निकाल कर करोड़ों-करोड़ों लोगों की जिन्दगी बचा ली है, ऐसा ख्याल किया जाता है, कि अगर किसी व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ रहा हो तो इसके इस्तेमाल से उसे रोका जा सकता है, हृदय के रोगियों के लिए तो यह जीवनदायक औषधि है।

दिल का दौरा तब पड़ता है, जब हृदय की किसी धमनी में खून का प्रवाह रुक जाता है, या रक्त ले जाने वाली धमनी में खून के थक्के की वजह से रुकावट पैदा हो जाय और हृदय को बराबर रक्त न मिले, रक्त प्रवाह धमनी के अन्दर खून के थक्के की वजह से कोलेस्टेरॉल के जमा जाने से भी हृदय पर दबाव बढ़ जाता है, और दिल का दौरा पड़ जाता है, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान भी अब इस बात को स्वीकार करता है, कि दिल का दौरा पड़ने का एकमात्र कारण खून ले जाने वाली नाड़ियों में खून का थक्का जम जाता है, फलस्वरूप रक्त के प्रवाह में बाधा आती है, और व्यक्ति के हृदय को बराबर रक्त न मिलने की वजह से उसकी धड़कन बढ़ जाती है, और वह दिल के दौरे में परिवर्तित होकर मृत्यु का कारण बन जाती है।

चिकित्सा

इस रक्त प्रवाहक नाड़ियों में खून से बने थक्के को हटाने के लिए उस नाड़ी का ऑपरेशन कर उस थक्के को हटा दिया जाता है, जिससे कि रक्त प्रवाह बराबर हो सके, पर यह सुविधा अत्यन्त विकसित और बड़े शहरों में ही सम्भव है, अब तो आधुनिक चिकित्सा पद्धति के द्वारा 'इम्लोपिन' उस स्थान पर पहुंचा देने से यह दवा उस जमे हुए थक्के को वहीं पर पिघला देती है और इस प्रकार इस बाधा को बिना ऑपरेशन के भी दूर कर दिया जाता है, पर यह दवा भारतवर्ष में कठिनाई से ही सुलभ है, पाश्चात्य देशों में आजकल इस दवा का प्रयोग खून के थक्के को मिटाने में किया जाता है, अथवा दिल का दौरा पड़ने के बाद यदि दस घण्टे के अन्दर-अन्दर 'स्ट्रेप्टोकिनासे' दवा दे दी जाय तो यह धीरे-धीरे उस थक्के को समाप्त कर देती है, व खून का प्रवाह दुबारा शुरू कर देती है, इसलिए यह दवा अत्यधिक उपयोगी है।

"वीरनरेटी" प्राणदायक जड़ी

इस जड़ी के बारे में पिछले सौ वर्षों से बराबर शोध हो रही थी, यद्यपि इसके बारे में विवरण तो कई आयुर्वेदिक ग्रन्थों में पढ़ने को मिलता है, परन्तु अभी तक इस बूटी के बारे में प्रामाणिक तथ्य प्राप्त न हो सके थे और न इसकी पहचान ही हो सकी थी, दो वर्ष पहले पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी ने इस जड़ी को खोज निकाला, जो कि हृदय रोग के लिए आश्चर्यजनक औषधि है और जिसकी गूंज विश्व हृदय रोग सम्मेलन में भी रही, इस समय भारतवर्ष में मात्र १५-२० पौधे ही बचे हैं, यदि समय रहते इनका संरक्षण नहीं किया गया तो अन्य जड़ी-बूटियों की तरह यह जड़ी भी लोप हो जायगी, परीक्षण करने पर इसके जो प्रभाव सामने आये हैं, वे विश्व को स्तब्ध और आश्चर्यचकित कर देने के लिए पर्याप्त है। *

हृदय रोग के प्रमुख कारण

उच्च रक्तचाप, मधुमेह तथा मोटापा ये तीन हृदय रोग के प्रमुख कारण है. धूम्रपान, ज्यादा घी विदाम या तली हुई चीजों का उपयोग भी इसके कारण है, रक्त में जितना अधिक कोलेस्ट्राल होगा दिल के दौरे की संभावनाएं उतनी ही अधिक बढ़ जायगी।

दिल का दौरा न पड़े इस हेतु व्यायाम निरन्तर करते रहना चाहिए, आलस्यपन, मानसिक उत्तेजना, तनाव तथा गुस्सा भी इस रोग को बढ़ाने में सहायक है, मशहूर अमेरिकी हृदय चिकित्सक पालवाइट कहते है, "अस्सी वर्ष के पहले हृदय रोग के लिए हम स्वयं जिम्मेदार है, भगवान या प्रकृति नहीं," इसका तात्पर्य यह है, कि यदि हम रहन सहन में तब्दीली करें और कम चर्बी वाले भोजन का उपयोग करें तो निश्चय ही हम इस रोग पर नियन्त्रण पा सकते है।

हृदय रोग के लक्षण

दिल के दौरे के जाने माने लक्षणों में सीने के बीच में और बाई ओर के हिस्से में तड़पाने वाला दर्द होता है, जो बाये कन्धे और बाई बांह तक फैल जाता है. कभी कभी गर्दन में दबाव सा महसूस होता है, साथ ही

हृदय रोग बचाव से सम्बन्धित सावधानियां

हृदय रोग और ब्लड प्रेसर से बचाव के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

१- थोड़ा भोजन करें और एक साथ ज्यादा भोजन न करें, थोड़े-थोड़े अन्तराल के साथ सरलता से पचने वाला भोजन करें।

२- शाम को सूर्यास्त से पहले भोजन कर लेना उत्तम माना गया है।

३- किसी भी हालत में वजन को बढ़ने न दें, अपितु प्रयत्न करें कि आपका वजन कम से कम रहे।

४- धूम्रपान हृदय रोगियों के लिए सर्वथा वर्जित है, सिगरेट तो दूसरे रूप में मृत्यु ही है, ऐसे रोगियों को पान में भी तम्बाकू का सेवन नहीं करना चाहिए।

५- ऐसा कोई व्यायाम या परिश्रम नहीं करना चाहिए, जिससे श्वास लेने में कठिनाई हो या सीने में दर्द होने लगे।

६- चिकनाई वाले पदार्थ, घी, मिठाई, आलू, चावल, चाय और काफी हृदय रोग के रोगियों के लिए शत्रुवत है, इसी प्रकार ऐसे रोगियों को मलाई, आइसक्रीम, चोकलेट, टॉफी, शरबत, कचोरी, तला हुआ भोजन आदि भी वर्जित है।

७- भोजन में हरी सब्जियां, ताजे कन्द मूल, सूखी चपाती ज्यादा हितकारी है।

८- मोटापा हृदय रोग के रोगियों के लिए शत्रु है, अतः वजन को कम करना आयु को बढ़ाना है।

भाग जरूरत से ज्यादा पसीना आता है, उल्टियां होने लगती है, मरीज को चक्कर आने लगता है, और उसे बेहोशी के दौरे आने लग जाते हैं।

शुरू में यह लक्षण कम अनुभव होते हैं, परन्तु ऐसा होते ही रोगी को सतर्क हो जाना चाहिए और किसी अच्छे डाक्टर को दिखा देना चाहिए।

डाक्टर के आने तक हम क्या करें

दिल के दौरे का लक्षण पता चलते ही रोगी को पीठ के बल लिटा देना चाहिए, उसके कपड़े ढीले कर देने चाहिए और कोई दर्दनाशक दवा उसकी जीभ के नीचे रखनी चाहिए, जिससे कि उसे राहत अनुभव हो।

यदि ऐसा लगे कि इसकी धड़कन बन्द हो गई है, तब भी उसे मृत नहीं समझना चाहिए, अपितु धीरे-धीरे हृदय पर जोरों से दबाव देकर फिर छोड़ देना चाहिए, इस प्रकार बार-बार करने से उसे धड़कन वापस अनुभव होने लग जाती है, तब तक पास के किसी अच्छे डाक्टर या अस्पताल से संपर्क स्थापित कर लेना चाहिए।

अस्पताल ले जाते समय भी यदि सम्भव हो तो हृदय चिकित्सा वाहन में ले जाना चाहिए जिससे कि उसको बहुत ज्यादा तकलीफ न उठानी पड़े।

सामान्य जीवन की ओर वापसी

इस प्रकार तत्परता से उपाय करने से व्यक्ति सामान्य जीवन की ओर बढ़ सकता है, आजकल पेसमेकर यन्त्र बन गये हैं, जो कि रोगी के शरीर में लगा दिये जाते हैं, और ये बराबर हृदय की धड़कन को नियन्त्रित रखते हैं, पेसमेकर के बनने से लाखों लोगों को नई जिन्दगी मिली है, अब तो हृदय के खराब वाल्वों के स्थान पर नये वाल्व लगाने और क्षतिग्रस्त हृदय को बदल कर नया हृदय लगाने की चिकित्सा भी पुरानी पड़ गई है, अब तो प्लास्टिक के बिल्कुल नये हृदय बन गये हैं, जो शरीर में स्थित क्षतिग्रस्त और पुराने हृदय को निकाल कर उसके स्थान पर इस प्लास्टिक से बने हृदय को लगा दिया जाता है और यह सही प्रकार से कार्य करता रहता है, यह हृदय सक्रिय में न तो क्षतिग्रस्त होता है और न उसको नुकसान ही पहुंचता है।

आयुर्वेदिक चमत्कार

पिछले पन्द्रह वर्षों में हुई तमाम प्रगति के बावजूद भी अभी तक हृदय रोग पर पूरी तरह से नियंत्रण प्राप्त नहीं हो सका है, विश्व के चिकित्सकों की राय के अनुसार अभी तो काफी मंजिल तय करनी है, पर आयुर्वेदिक चिकित्सा ने उन लोगों को भी बाध्य कर दिया है कि वे इस बात को स्वीकार करें कि इसके माध्यम से हृदय रोग पर पूरी तरह से नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है।

'पीरमरेटि' आयुर्वेदिक जड़ी है, जिसका प्रयोग प्राचीन भारत में बराबर किया जाता था, आज भी यह जड़ी हृदय रोग के रोगियों के लिए आश्चर्यजनक रूप से उपयोगी है, इसकी पत्तियों का ताजा रस निकाल कर यदि दो बूंद ही रोगी के शरीर में पहुंचा दी जाय, तो दिल का दौरा पड़ने पर भी वह स्वस्थ हो

हृदय रोग से बचने के पांच उपाय

१– उच्च रक्तचाप मनुष्य का शांत हत्यारा है।

२– मोटापा हृदय रोग लाने वाला पहला शत्रु है।

३– तनाव और क्रोध हृदय रोग का प्रमुख आधार है।

४– अति सेक्स, उत्तेजना और सेक्स जीवन व्यतीत करना हृदय रोग को बुलावा देना है।

५– टेरिकाट के कपड़े पहिनना, अनियमित आहार तथा तली हुई वस्तुओं का सेवन निश्चित रूप से हृदय रोग का कारण है।

जाता है, पिछले दिनों विश्व हृदय सम्मेलन में भी इस औषधि की प्रशंसा की गई और बताया कि इस औषधि के सेवन से हृदय के वाल्व स्वतः ही ठीक हो जाते हैं, यही नहीं इस औषधि में ऐसा चमत्कार है कि यदि हृदय क्षतिग्रस्त हो गया हो या हृदय की धमनी में दरार पड़ गयी हो तो इसके सेवन से हृदय पुनः ठीक होकर सही प्रकार से कार्य करने लग जाता है, यदि सिरिंज के माध्यम से इसकी पत्तियों का रस रक्त में पहुंचाया जाय तो रक्त प्रवाह धमनियों में जो खून के थक्के जम जाते हैं, वे स्वतः पिघल कर समाप्त हो जाते हैं और हृदय को रक्त प्रवाह बराबर प्राप्त होने लगता है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि यह एक ऐसा पौधा है, जो किसी भी जलवायु में उग जाता है, इसकी पत्तियां तो आश्चर्यजनक रूप से प्राणदायक है और हृदय रोग के रोगियों के लिए तो इससे ज्यादा श्रेष्ठ और कोई औषधि ही नहीं है।

आने वाला इतिहास इस बात की गवाही देगा कि लाखों रुपये खर्च कर भी आपरेशन, इंजेक्शन और दवाइयां दी जाती हैं, उसके मुकाबले यह आश्चर्य जनक जड़ी बूटी करोड़ों गुना ज्यादा लाभदायक है, यद्यपि इस जड़ी-बूटी का विवरण प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रन्थों में बराबर मिलता है, परन्तु इसकी प्रामाणिक खोज और पहिचान तो दो वर्ष पहले ही हो सकी है और इसके जो परिणाम सामने आये हैं, वे चिकित्सा विज्ञान में तहलका मचा देने के लिए पर्याप्त हैं। 卐

आरोग्य

रक्तचाप

रक्तचाप में आदमी जरूरत से ज्यादा परेशान और दुःखी हो जाता है, चाहे वह निम्न या उच्च रक्तचाप हो इसमें थकान का कारण मात्र न कभी आ जाती है, और आगे चलकर यह रक्तचाप कई बीमारियों को जन्म देता है, जिसमें हृदय रोग प्रमुख है।

अनियमित खानपान चिन्ता, तनाव, भावात्मक विरोध से घबराहट जरूरत से ज्यादा सेक्स आदि की वजह से यह रोग हो जाता है, एक बार यह रोग मनुष्य को लग जाता है, तो फिर आसानी से दूर नहीं होता।

पर मुझे एक उच्च कोटि के महात्मा ने इससे सम्बन्धित औषधि बताई थी, जो मैं पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट कर रहा हूं—

सर्पगन्धा जड़ी — आसानी से प्राप्त हो जाती है, इसे कूट कर पाउडर की तरह बनाकर किसी शुद्ध साफ शीशी में भरकर रख लें, और यदि नित्य दो ग्राम पाउडर सामान्य पानी के साथ उठते ही ले लें, तो कुछ ही दिनों में रक्तचाप नियमित हो जाता है, और भविष्य में उसे कभी इस रोग की शिकायत नहीं रहती।

यह मैंने हजारों रोगियों पर आजमाया है, और मुझे आशातीत सफलता प्राप्त हुई है, यह ध्यान रहे कि बाजार में नकली सर्पगन्धा बहुत मिलती है, अतः इसका सेवन करने से लाभ के स्थान पर हानि हो सकती है।

कि लाखों रुपये खर्च
शन, इंजेक्शन और
ती है, उसके मुकाबले
जड़ी बूटी करोड़ों
दायक है, यद्यपि इस
विवरण प्राचीन
में बराबर मिलता
प्रामाणिक खोज
दो वर्ष पहले ही हो
के जो परिणाम
चिकित्सा विज्ञान
के लिए पर्याप्त

卐

...च रक्तचाप
...को जन्म
...की वजह
...।
...डकों के
...ति शुद्ध
...ो कुछ
...है कि
...है।

★ प्रेरणास्पद

ये छः स्वर्णिम सूत्र हैं, जिनसे आप अपना नाम भाग्यशालियों में लिखा सकते हैं

भाग्य ऐसे बदलता है

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति भाग्यशाली बनना चाहता है, प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि वह जीवन में आने वाली समस्याओं और बाधाओं को दूर कर अपने लक्ष्य की ओर तेजी से अग्रसर हो सके और उसमें सफलता पा सके, इस प्रयत्न में प्रत्येक व्यक्ति भाग रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक मनुष्य अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर ही ले, दिन भर मेहनत मजदूरी कर, व्यापार कर, और सैकड़ों प्रकार के छोटे-मोटे कार्य कर पूर्ण भाग्यशाली बनने का उपक्रम वे अवश्य करते हैं, परन्तु फिर भी उनके जीवन में निराशा ही रहती है और वृद्धावस्था में आकर वे जब अपने पूरे जीवन का विश्लेषण करते हैं तो उन्हें अनुभव होता है कि जो कुछ उन्हें मिलना चाहिए था जितनी सफलता उन्हें प्राप्त होनी चाहिए, उतनी सफलता नहीं मिल सकी है, और इसीलिए वे जीवन में हताशा और निराशा अनुभव करते हैं।

मैंने पिछले दो वर्षों में लगभग बीस हजार लोगों से यह प्रश्न किया कि आखिर क्या कारण है कि व्यक्ति भाग्यवान बन जाता है और ऐसी कौन सी बातें हैं, जो दुर्भाग्यशाली नहीं कर पाते और जीवन में असफल होकर रह जाते हैं, इस सर्वेक्षण के बाद जो कुछ तथ्य सामने आये, उसके अनुसार छः ऐसे सूत्र हैं, जिनका यदि भली प्रकार से उपयोग किया जाय तो व्यक्ति भाग्यशाली हो सकता है और जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है, ये छः ऐसी बातें हैं, जो भाग्यशाली और अभाग्यशाली व्यक्तियों के बीच फर्क साबित कर सकती हैं, मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि यदि व्यक्ति इन छः सूत्रों का अपने जीवन में पालन करे, तो अवश्य ही अपनी किस्मत को बदल सकता है और जीवन में भाग्यशाली बन सकता है।

१- मित्रों का दायरा बढ़ाइये

सामान्यतः भाग्यशाली वे होते हैं, जिनकी दोस्ती का दायरा बड़ा होता है, शानदार और अ... व्यक्तित्व वाले व्यक्ति इस प्रकार... दायरे में विशेष सफलता प्राप्त... लेते हैं, कोई भी काम निकाल... उनके लिए बायें हाथ का खेल ह... है, क्योंकि वे एक कड़ी से दूसरी... जोड़ने में सफल हो पाते हैं, सही... तो यह है कि ऐसे ही व्यक्ति भ... शाली हो सकते हैं, जो कार्य के... सही व्यक्ति का चुनाव कर सकें... उनसे अपना काम निकलवा स... यह तभी सम्भव होता है, ... उनकी दोस्ती का दायरा बड़ा... हो, ऐसे व्यक्ति हंसमुख, ... चित्त और जिन्दादिल होते हैं, ... सुम एकांत प्रिय और अपने ... खोये-खोये नहीं रहते, क्योंकि... व्यक्तियों के सम्पर्क में कोई भ... नहीं चाहेगा, इसके विपरीत ... व्यक्ति हवाई जहाज में ...

समय भी अपने पास की सीट वाले व्यक्ति से बात करेंगे और एक क्षण में ही निर्णय ले लेंगे कि इस व्यक्ति से क्या काम निकाला जा सकता है, समय आने पर वे उनसे वह व्यवहार कर अपने दोस्तों में उनको शामिल कर लेते हैं, और अपना काम निकाल लेते हैं, आपको शायद आपके घर में अखबार देने वाले की सूरत याद ही नहीं होगी, परन्तु ऐसे व्यक्ति न सिर्फ उसकी सूरत से परिचित होते हैं, अपितु उनके घर का पता, उसकी क्षमता और उसके मित्रों के बारे में भी जानकारी रखते हैं और समय पड़ने पर उससे लाभ उठा लेते हैं।

आपकी दोस्ती का दायरा जितना विस्तृत होगा, जीवन में उतने ही स्वर्णिम अवसर आपको हाथ लगेंगे, उच्चकोटि के भाग्यशाली लोगों का प्रारम्भ अत्यन्त सामान्य से दिखने वाले मित्रों के द्वारा ही हुआ है, फिर तो वे स्वत: कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए आगे बढ़ गये हैं, इसलिए हमेशा अपने आप को तरोताजा, स्वस्थ और प्रसन्नचित्त प्रदर्शित कीजिये, प्रयत्न कीजिये कि आप छोटे से छोटे और बड़े से बड़े व्यक्ति के सम्पर्क में आवें और हृदय से उनके प्रति स्नेह और अपनत्व अनुभव करें, इससे आपके मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी और यह वृद्धि आपको निश्चय ही जीवन में भाग्यशाली बनाने में सहायक होगी।

२- मन की उमंगों को पहिचानिये

हमारा मन प्रभु की तरफ से वरदान है, इसमें कई बार ऐसी उमंग, उत्साह और जोश के क्षण व्याप्त होते हैं कि हम अपने आप में चकित रह जाते हैं, भले ही हम एकान्त प्रिय हों, भले ही अलग-थलग रहने वाले हों, और भले ही हम उदास तथा खोये-खोये से रहते हों, परन्तु हमारे मन में कभी-कभी अचानक ऐसा विचार और तरंग उत्पन्न हो जाती है, जिसका यदि सही समय पर उपयोग किया जाय तो लाभ मिल सकता है।

हिल्टन यूरोप के होटलों का बेताज बादशाह है; आज विश्व में उसका नाम है, प्रारम्भ में हिल्टन गरीब था, एक दिन किसी होटल में चाय पीने गया तो उसको फटकार दिया गया, क्योंकि उसके पास उतने पैसे नहीं थे, यह बात उसे चुभ गई और मन के कोने से एक तरंग सी उठी कि मैं जीवन में अवश्य ही होटल खोल कर रहूँगा और वह इसके पीछे पड़ गया, जिसका परिणाम आज वह विश्व में सर्वश्रेष्ठ होटल श्रृंखलाओं का मालिक है।

लन्दन के विलियम ए० कह सामान्य खलासी थे और किसी जहाज पर काम करते थे, एक बार उनके मन में एक लहर उठी कि कोई पुराना जहाज खरीद लिया जाय और भाग्य आजमाया जाय, कोई दूसरा होता तो जितनी तेजी से यह विचार मन में आया, उतनी तेजी से मिट जाता, परन्तु उसने उसी दिन नौकरी छोड़ दी और उसके पास जो उपार्जित सम्पत्ति थी, उससे और कुछ दोस्तों से कर्ज लेकर एक पुराना जहाज खरीद लिया, तथा पूरी लगन और ईमानदारी के साथ माल ढोने लगा, आज वह संसार का सर्वश्रेष्ठ जहाजों का अरबपति व्यापारी है, यदि वह उस क्षण उस तरंग को दबा देता तो आज भी वह किसी जहाज पर सामान्य खलासी ही बना रहता।

इसलिए जीवन में अपनी भावनाओं और उमंगों पर ध्यान दीजिये पर शराब, जुआ, लॉटरी, घुड़दौड़ आदि लुभाने वाली तरंगों पर ध्यान न देकर ऐसी उमंगों पर विचार कीजिये जो आने वाले समय में आपको स्थायित्व दे सकें।

यदि आप मन की लहर को पहिचान लें, और तदनुरूप अपने को ढालने की क्रिया का ज्ञान आपको होगा तो निश्चय ही आप अपने जीवन में भाग्यशाली बन सकेंगे, और समृद्धमय जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

दिलेरी दिखाइये

भाग्यवान दिलेर होते हैं, उनके अन्दर जोश और आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा होता है, चुनौतियों का

डटकर सामना करते हैं, हिम्मत उनके साथ होती है, और किसी कार्य को करने से पूर्व एक क्षण रुककर उसको लाभ हानि पर सोच विचार कर लेते हैं, फिर वे विचलित नहीं होते और न आगा पीछा सोचने में समय गंवाते हैं पूरी क्षमता के साथ उस कार्य को करने में जुट जाते हैं, और अपना नाम भाग्यशालियों में लिखवा लेते हैं, ये पंक्तियाँ कागज पर लिखकर अपनी टेबल पर लगा दीजिये "जो घबरा कर समुद्र के किनारे बैठे रहते हैं, उन्हें जीवन में घोंघे या कंकर पत्थर ही हाथ लगते हैं, पर जो दिलेरी के साथ समुद्र के बीच धार में कूदते हैं, वे ही भाग्यशाली लोग मोती लाने में समर्थ हो पाते हैं।"

कभी भी बंधी बंधाई लीक पर मत चलिये, अपने लिए नया रास्ता खोजिये कोई अवसर हाथ में आ जाय तो हिम्मत के साथ उसे स्वीकार कीजिये, जीवन में वे ही व्यक्ति सफल हो पाते हैं, जो कुछ नवीनता के साथ नया कर के दिखा सकते हैं।

इस बात का ध्यान रखिये कि दिलेरी और दुस्साहस में अन्तर है, किसी एक दांव पर ही जीवन का सब कुछ लगा देना दुस्साहस है, मूर्खता और अविवेक है, किसी भी योजना या कार्य के सभी परिणामों पर गम्भीरता से सोचिये और इस कार्य में ज्यादा से ज्यादा कितना नुकसान हो सकता है, इसका अनुमान पहले से ही लगा लीजिये, और फिर उस कार्य में जुट जाइये, निश्चय ही यह दिलेरी आपको भाग्यशाली बनाने में सहायक रहेगी।

४– चुनौतियों का सामना कीजिये

कोई भी लक्ष्य आसानी से प्राप्त नहीं हो जाता। प्रत्येक कार्य के सम्पन्न होने में बाधाएं और अड़चनें तो आयेंगी, यह पंक्ति मेरे लिए स्मरणीय है, कि "चुनौतियां हैं ही इसलिए कि हम उनका सामना कर सकते हैं" इसलिए अपने आपको प्रत्येक परिस्थिति, समस्या और चुनौती के लिए तैयार रखिये, इस बात का मन में निश्चय रखिये कि आप जो भी सौदा करें सबसे पहले इस बात का ध्यान रखें कि अगर मामला बिगड़ गया तो आपके बचाव का रास्ता क्या होगा?

कभी भी इस गलतफहमी में मत रहिये कि सौभाग्य की वर्षा हमेशा आप पर होती रहेगी, कोई चीज बिगड़नी है तो बिगड़ेगी ही, कोई दुर्भाग्य आना है तो आयेगा ही, ऐसी स्थिति आने पर विचलित मत होइये, अपितु जोश के साथ उसका सामना कीजिये आप अनुभव करेंगे कि जब आपने अपने आपको इसके लिए तैयार ही कर लिया है तो उस समस्या से पार पाने का रास्ता भी मिल जायेगा।

ध्यान रखिये कि यह जिन्दगी आपके वश में नहीं है, इस भ्रम में ही मत रहिये कि सब कुछ आपके नियंत्रण में है, क्योंकि ऐसा होने पर आप दुर्भाग्य के प्रति सचेत नहीं हो पायेंगे और अचानक मुसीबत आ जाने पर आप नैतिक साहस जुटा नहीं पायेंगे, अच्छे भाग्यशाली लोग हमेशा यह मान कर चलते हैं कि सौभाग्य चपल और चंचल है, हर क्षण साथ नहीं दे सकता, इसलिए कैसी भी विपत्ति या संकट आ जाने पर अपने आपको उसका सामना करने के लिए तैयार रखिये, फिर कोई संदेह नहीं कि आप जीवन में भाग्यशाली न बन सकें।

५– कम से कम नुकसान उठाइये

भाग्यशाली व्यक्ति निरन्तर खराब होती हुई स्थिति से बचने की कोशिश करते हैं, कोई नया काम शुरू करने के बाद यदि नुकसान हो रहा हो तो उसे तुरन्त बन्द कर दीजिये, क्योंकि यदि उसे रोका नहीं, तो बाद में समस्या

बद से बदतर होती चली जायगी, एक क्षण ऐसा होता है, जब उस व्यापार को बन्द करने पर कोई नुकसान नहीं होता, पर यदि वह समय चूक गये तो आगे जाने पर चाह कर भी उस कार्य को बन्द नहीं कर पायेंगे और पूरा जीवन उसके शिकंजे में आ जायगा, उदाहरण के लिए कोई व्यापार प्रारम्भ करने के बाद चार महीने में ही पता चल जाय, कि दस हजार का कर्ज हो गया है, तो उसी समय कार्य को बन्द कर देना समझदारी है, पर यदि बन्द नहीं किया और आगे बढ़ते गये तो साल भर में वह कर्ज एक लाख रुपये हो जायगा, फिर आप बन्द करना चाहेंगे तो भी कर्ज मांगने वाले बन्द करने नहीं देंगे और उस कर्ज को उतारने में पूरी जिन्दगी बरबाद हो जायगी, पर यदि चौथे महीने में ही वह कार्य बन्द कर देते तो भी बाद में नब्बे हजार का नुकसान और हुआ, उससे बच सकते थे और वह दस हजार का कर्जा दो चार महीनों में उतार कर नये सिरे से भाग्य आजमा सकते थे।

इसलिए भाग्यशाली व्यक्ति यथासम्भव नुकसान से बचने का प्रयत्न करते हैं।

अपनी भूल स्वीकार कर लेना बहुत मुश्किल होता है, उस कार्य को छोड़ने में तकलीफ होती है, जिसमें कुछ पैसा या श्रम लगा होता है, लेकिन फिर भी समझदारी इसी में होती है कि इसे छोड़कर कम से कम नुकसान उठायें और ऐसे कार्यों से बचिये जो ज्यादा नुकसान दे सकते हैं।

भाग्यशाली लोग बराबर सतर्क निगाहों से अपने कार्य पर नजर डाले रखते हैं, और नुकसान से अपने आपको बचाने के प्रयत्न में रहते हैं।

६– साधना सिद्ध करिये

जो काम प्रयत्न और परिश्रम नहीं कर सकता वह मन्त्र और साधना कर सकती है, पर आवश्यकता है, योग्य गुरु अथवा मार्गदर्शक की और जरूरत है सही प्रकार से साधना सिद्ध करने की, ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं, जब व्यक्ति चारों तरफ से घिर गया हो पर साधना के बल पर वापिस अपना नाम भाग्यशालियों की लिस्ट में लिखा दिया हो।

चाहे आप नास्तिक हैं, चाहे आप ईश्वर में विश्वास न करते हों पर इस बात को तो मानना ही पड़ेगा कि कोई एक अदृश्य सत्ता अवश्य है, जो पूरे ब्रह्माण्ड को संचालित करती है, इस सत्ता को अपने अनुकूल बनाने के लिए भाग्योदय मन्त्र और साधना आवश्यक है।

इस साधना के लिए अपने सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'भाग्योदय यन्त्र' स्थापित कर स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की नित्य एक माला फेरें तो निश्चयेह कठिनाइयों में स्वतः ही राह दिखाई देने लग जाती है, और परेशानियों के बादल छंटने लग जाते हैं, दुर्भाग्य समाप्त होकर सौभाग्य का सूर्योदय उभरने लग जाता है।

उसका मन्त्र है— "ॐ ह्रीं श्रीं मम समस्त सौभाग्यं देहि देहि कार्य सिद्धय सिद्धय श्रीं ह्रीं ॐ नमः।"

वस्तुतः यह मन्त्र आश्चर्य युक्त तेजस्वी है, जिसका प्रयोग हजारों-हजारों भाग्यशालियों ने उठाया है, आप भी इस मन्त्र का प्रयोग कीजिये और देखिये सौभाग्य स्वयं आपके गले में जयमाला डालने के लिए प्रस्तुत है।

विश्व का सर्वाधिक तेजस्वी साबर मन्त्र

—विकट स्वामी

साबर मन्त्र का तात्पर्य, ऐसे मन्त्र जो सरल हों, सुविधाजनक हों पर प्रभाव एवं अचूक लक्ष्य में अद्वितीय हों, इसीलिए साबर मन्त्रों की महत्ता सर्वाधिक है।

वास्तव में ही साबर मन्त्र अपने आप में विशेष विस्फोट लिए हुए होते हैं, जिस कार्य से सम्बन्धित वे मंत्र होते हैं, उनका यदि सही प्रकार से पालन किया जाय और प्रयोग किया जाय तो वे मंत्र तुरन्त फल देने में समर्थ है, मेरे दादाजी उच्च कोटि के साबर मन्त्र सिद्ध साधक थे, उन्होंने इन मन्त्रों के माध्यम से ऐसे-ऐसे कार्य किये थे, कि आज भी सुनकर दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है, जब उनकी मृत्यु हुई तब मैं २२ साल का नवयुवक था, मेरी तीव्र इच्छा थी, कि मैं उनसे साबर मंत्र साधना सीखूं परन्तु उन्होंने कभी भी मुझे इस रास्ते पर नहीं डाला, उनका कहना था, कि समय आयगा तब मैं स्वतः सिखा दूंगा, परन्तु एक दिन अचानक हृदय गति रुक जाने से उनका देहांत हो गया, और मैं उनसे कुछ भी न सीख सका, शून्य में से मन-चाही वस्तु या पदार्थ प्राप्त कर लेना, बहादुर और भीमकाय व्यक्ति का भी मुंह बंद कर देना, या उसकी शक्ति समाप्त कर देना, पुरुष को स्त्री बना देना, पचास मन वजन को पुष्प की तरह उठा लेना,आदि कई ऐसे कार्य थे, जो उन्हें करते हुए मैंने अपनी आंखों से देखा था, मैंने यह भी सुना था, कि उन्होंने आठ दस भूत वश में कर रखे थे, साबर मन्त्रों के माध्यम से उन भूतों को वश में करने की वजह से वे स्थायी रूप से उनके नियन्त्रण में रहते थे, तथा उनके द्वारा मनोवांछित कार्य सम्पन्न करा लेते थे।

मेरे दादा जी प्रसिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ सम्प्रदाय के योगी कपालानन्द जी के शिष्य थे, और उनसे दीक्षा ली थी, वे अपने जमाने में अद्वितीय सिद्ध पुरुष थे, उनके बारे में कहा जाता था, कि उन्होंने दक्षिण में बने हुए एक मंदिर को जड़ से उखाड़ कर वायु मार्ग से प्रयाग के निकट लाकर जमा दिया था, और आज भी वह मंदिर प्रयाग-अयोध्या मार्ग पर अवस्थित है, यही एक मात्र ऐसा मंदिर है, जो उत्तर भारत में होते हुए भी दक्षिण शैली से निर्मित है, आज भी उनके गद्दीधारी शिष्य उस मंदिर के योगी है।

उनके पास एक डायरी रहती थी, जिसमें अत्यंत उच्च कोटि के साबर मंत्र लिख रखे थे, अपने कुछ प्रमुख प्रमुख शिष्यों को उन में से कुछ मंत्र सिद्ध भी करवाये थे, सुना है, कि त्रिजटा अघोरी के सम्पर्क में भी वे कुछ दिन रहे थे, और कुछ विशेष साधनाएं उन्होंने त्रिजटा अघोरी से भी सीखी थी।

स्वामी कपालानंद साबर मंत्रों के सिद्ध पुरुष थे, उनकी प्रशंसा यदि त्रिजटा ने की है, तो निस्सन्देह इस क्षेत्र में अद्वितीय सिद्ध योगी रहे होंगे।

त्रिजटा ने एक बार बातचीत के दौरान बताया कि "कपालानन्द साबर साधना का सिद्ध योगी है

इनके पास तो एक साधना अद्वितीय है, जो "संसार की सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय साबर साधना है।" इसका तात्पर्य यह था कि विश्व का सर्वश्रेष्ठ साबर मन्त्र स्वामी कपालानन्द के पास था, जो उन्हें सीधे ही साबर मन्त्रों के आदिजनक भगवान शंकर से प्राप्त हुआ था, कहा जाता है कि एक बार साबर मन्त्रों के जनक ... भगवान शिव को प्रसन्न करने पर उन्होंने साक्षात दर्शन दिये थे, और वरदान मांगने पर स्वामी कपालानन्द ने संसार का सर्वश्रेष्ठ साबर मन्त्र जानने की इच्छा प्रकट की थी, तब भगवान शिव ने स्वयं अपने मुख से उस अद्वितीय मन्त्र और उसकी साधना विधि योगी कपालानन्द को सिखाई थी, इसीलिए वे उस युग के अद्वितीय पुरुष कहे गये थे।

मेरे दादाजी ने स्वामी कपालानन्द जी की बहुत अधिक सेवा की थी और १७ वर्ष तक उनके साथ रहे थे, उनकी सेवा से प्रसन्न होकर स्वामी जी ने मेरे दादाजी को इस सर्वश्रेष्ठ साबर मन्त्र का ज्ञान और साधना विधि समझाते हुए कहा था कि यह मन्त्र मुझे प्राणों से भी प्रिय है, साक्षात भगवान शिव के मुख से इस मन्त्र को सीखा है, अभी तक मेरे बाद के गद्दीधारी शिष्य को भी मैंने यह मन्त्र नहीं दिया है और न देने की इच्छा है; पर यह करोड़ों परमाणुओं की शक्ति समेटे हुए है।

आगे अपनी बात कहते हुए कपालानन्द ने मेरे दादा जी को कहा कि मैं तेरी सेवा से अत्यधिक प्रसन्न हूं और यह साबर मन्त्र तुम्हें सिखा रहा हूं, इसके माध्यम से पूरे विश्व में हलचल पैदा की जा सकती है, संसार का कोई ऐसा कार्य नहीं है, जो इसके माध्यम से सम्पन्न न होता हो, इसके माध्यम से समुद्र के पानी को अपने किनारे से आधा किलोमीटर अन्दर की ओर ठेला जा सकता है, पूरे के पूरे गांव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर परिवर्तित किया जा सकता है और विश्व में कहीं पर भी आना जाना हो सकता है, इसके अलावा इस मंत्र में इतनी अधिक खूबियां और शक्तियां हैं कि जिसका वर्णन सम्भव नहीं।

दादाजी ने यह मन्त्र उनसे सीख कर अपनी डायरी में लिख लिया था, यह डायरी उनकी मृत्यु के बाद मेरे हाथ लगी थी, इसलिए मैं उसमें दिये हुए संकेतात्मक रूप से साधना विधि और पूर्ण प्रामाणिक मन्त्र नीचे दे रहा हूं, इस मन्त्र को सिद्ध करने के लिए २२ दिन लगते हैं, जिस रात्रि को साधक सर्वथा नग्न होकर कुएं पर जावे और वहां स्नान कर नग्न ही ... बैठकर इस मन्त्र का सर्प की हड्डियों की माला से मन्त्र जप करे, मन्त्र जाप करते समय सामने लोबान धूप जलता रहे तथा नित्य ५१ मालाएं इस मन्त्र की जपनी आवश्यक है, यह रात्रि साधना है, अतः रात्रि को ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

इसके बाद डायरी में यौगिक संकेतों में साधना की "गुह्य क्रिया" लिखी हुई थी, जो कि मैं समझ नहीं पाया बहुत बाद में मैंने जब स्वामीजी जी से इन यौगिक संकेतों और यौगिक भाषा में लिखी हुई गुह्य क्रिया को समझना चाहा, तो क्रमशः बढ़ते हुए मेरे साधना क्रम के अनुसार मुझे यह गुह्य क्रिया समझा दी थी, इस साधना की सिद्धि के लिए इस गुह्य क्रिया को सम्पन्न करना अत्यावश्यक है, तभी साधना सिद्ध हो सकती है, फिर भी नीचे दिया हुआ मन्त्र तो अद्वितीय है ही, और जिसके शब्दों में "यह संसार का सर्वाधिक तेजस्वी साबर मंत्र है।

मन्त्र— ॐ ह्रीं स्ट्रं स्हं क्लीं पाञ्चजन्य धूर्जटे श्मशान वरास्य खिड्गा शूल त्रिलोचनाय त्रिपुर वाहनाय नाहरसिंह कट कट विकट घोर रूप प्रेत वर्ग पर्वत वास अप्रतिहते कुरु कुरु मन्त्र भेदने जानु भेदने गगन भेदने पृथ्वी भेदने त्रिपुरकामिनी काल रात्रि शुद्ध शेखर अटल वीर्य महेश्वर क्लीं सः ह्रीं क्लीं ऐं ब्लौं महाप्रदा त्रैलोक्यं ह्राक्षिके मोक्षी सिद्ध रूपेण सिद्ध रूपेण कार्य रूपेण ब्रह्माण्ड रूपेण मनोवांछित कार्य सिद्धि कुरु कुरु वश्यं कुरु कुरु हुंम हन पच पच दह दह महापराक्रम महाबल स्तम्भय स्तम्भय बन्ध्य बन्ध्य सिद्ध फट् स्वाहा।

वस्तुतः यह मन्त्र जिस प्रकार से डायरी में अंकित था, वह मैंने पत्रिका के अनुरोध पर लिखकर भेजा है, पत्रिका पाठकों को चाहिए कि वे बिना योग्य गुरु के निर्देशन व सान्निध्य के इस साधना को सम्पन्न न करें।★

संसार की दुर्लभ पांच सिद्धियां

स्वामी विरोचन देव

यह संसार जो हम और आप देख रहे हैं, इसके अलावा भी एक और संसार है, जो इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण और भव्य है, जिसका अपना इतिहास अपनी परम्परा और अपना गौरव रहा है, इसे साधना संसार कहा जाता है, जिसमें उच्चकोटि के योगी, सन्यासी और गृहस्थ हैं, जिन्होंने अपनी असीम सिद्धियों के बल पर पृथ्वी पर पूर्ण नियन्त्रण और विजय प्राप्त कर रखी है, जिनके द्वारा ही पूरे विश्व का आध्यात्मिक संचालन सम्भव है, जो असम्भव से असम्भव कार्य करने में सिद्ध हैं, ऐसे ही साधकों के बल पर सही अर्थों में यह समाज, देश और विश्व टिका हुआ है।

यों तो हजारों साधनाएं हैं, और प्रत्येक प्रकार की साधनाओं के द्वारा विश्व को ज्यादा सुखी, ज्यादा सफल और ज्यादा सम्पन्न बना सकते हैं, परन्तु सदियों से मानव चमत्कार में विश्वास करता आया है, ऐसी अलौकिक घटनाएं, ऐसे अलौकिक कार्य जिस पर सहज विश्वास नहीं हो सके, ऐसे ही उपायों और साधनाओं से विश्व चमत्कृत रहा है, पर ऐसे चमत्कार उच्च कोटि की साधनाओं के माध्यम से ही सम्भव है, और ऐसी साधनाएं सामान्य साधकों और योगियों के बस की बात नहीं है।

इसके अलावा उच्च कोटि की साधनाएं हमेशा गोपनीय रही हैं, इन साधनाओं को उच्च कोटि के योगियों ने अपने उन प्रमुख शिष्यों को ही दी, जो उनके निकटतम कृपा पात्र रहे या उन्होंने उनकी बहुत अधिक सेवाएं की, साथ ही उन्हें यह आज्ञा दे दी, कि ये साधनाएं गोपनीय रखी जाय और भूल करके भी लोगों को न बताई जाय, इसी वजह से ये साधनाएं अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण होते हुए भी जन साधारण तक नहीं पहुंच सकी और न कागजों पर कलम के माध्यम से उतर सकी, इसी वजह से कई उच्च कोटि की साधनाएं तो लुप्त ही हो गई या कुछ ऐसे योगियों के पास बची रही जो सामान्य आदमी की पहुंच के बाहर है।

इस पत्रिका ने समय-समय पर कई महत्वपूर्ण, दुर्लभ और गोपनीय साधनाएं प्रकट की है, इन पृष्ठों के माध्यम से मैं पांच अत्यधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधनाएं तथा उनका विधान दे रहा हूं जिससे कि यह थाती सुरक्षित रह सके और आने वाली पीढ़ियां इन पृष्ठों के माध्यम से संबंधित साधनाएं सम्पन्न कर सफलता प्राप्त कर सके।

व्योमचारी साधना

व्योमचारी का तात्पर्य सशरीर आकाश में उड़ना है, उड़ने से तात्पर्य साधक इस साधना को सम्पन्न कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आकाशमार्ग से आ जा सके।

यह सही है, कि इस प्रकार की साधनाएं प्रत्येक व्यक्ति को पढ़कर के ही नहीं कर लेनी चाहिए क्योंकि गुरु की आवश्यकता होती ही है, इनमें तन्त्रकोटि की साधनाओं में कमी या न्यूनता रह सकती है, गुरु तो वही दीपक बना रहता है, यदि साधक चाहे तो उस दीपक से सूर्य बना सकता है, पर यदि दीपक को ही ज्ञान नहीं होगा तो सूर्य कैसे बनेगा ?

यह साधना ४२ दिन की साधना है, साधक को सर्वथा एकांत स्थान का चयन करना चाहिए, रात्रि-कालीन साधना होने की वजह से रात को ही यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए परन्तु इन ४२ दिनों में साधक अन्य किसी प्रकार का कार्य नौकरी या व्यापार न करे, साथ ही साथ ब्रह्मचर्य व्रत एक समय भोजन सात्विक आहार, और सर्वथा एकांत में रहे, इस अवधि में वह मंत्र जप के अलावा न तो किसी प्रकार के शब्द का उच्चारण करे, और न किसी प्रकार के व्यक्ति से कोई बातचीत ही करे।

यह किसी भी महीने की शुक्ल पक्ष की पंचमी से प्रारम्भ की जा सकती है, रात्रि को साधक स्नान कर सर्वथा निर्वस्त्र होकर सफेद आसन पर बैठ जाए, शरीर पर यज्ञोपवीत भी न रखे और न किसी प्रकार का आभूषण ही धारण किये रहे, साधक का मुंह पूर्व दिशा की तरफ रहे, तथा स्फटिक माला से निम्न मन्त्र की नित्य १११ मालाएं फेरे, इस मंत्र जप में न्यूनता न रहे और जप करते समय किसी प्रकार का आलस्य, झपकी, नींद, मलमूत्र विसर्जन आदि क्रिया सम्पन्न न करे, सामने [illegible] दीपक प्रज्वलित रहे और यह अखण्ड दीपक ४२ दिनों तक निरन्तर जलता रहे जो कि शुद्ध घृत का हो।

मन्त्र

ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं क्लीं हूं नमः कामेश्वरी इच्छा सर्व सूक्ष्म देहि आकर्षय श्वेत अरुण समन्विते मोक्षं कुरु कुरु ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं ॥

जब साधना सम्पन्न हो जाय, तब काले कपास के सूत की बत्ती बनाकर उसे तेल से भिगोकर अपने हाथ में रख ले और पुनः उपरोक्त मन्त्र के विलोम की तीन मालाएं फेरे, इस प्रकार करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है, और साधक जब भी चाहे अपने शरीर को सूक्ष्म रूप में परिवर्तित कर आकाश विचरण कर सकता है, अथवा मनोवांछित स्थान पर जब भी चाहे जा सकता है।

इसमें किसी देवी या देवता के ध्यान की जरूरत नहीं है, फिर भी यह कामेश्वरी साधना कही जाती है, जिससे कि साधक निश्चय ही अपने उद्देश्य में पूर्णता प्राप्त कर लेता है।

२- लुप्त देह साधना

यह साधना भी महत्वपूर्ण और गोपनीय कही गई है, इसके साधक इस मंत्र के द्वारा अपनी देह को लुप्त कर लेता है और उसे कोई भी देख नहीं पाता परन्तु इस साधना की विशेषता यह होती है, कि लोग तो उसे देख नहीं पाते, परन्तु वह सबको देख पाने में समर्थ रहता है, इस लुप्त देह क्रिया में वह चाहे तो महीनों और वर्षों रह सकता है, और वह चाहे तो तुरन्त प्रकट हो सकता है, इससे उसके शरीर का किसी प्रकार का कोई क्षरण नहीं हो पाता, ऐसी क्रिया में शरीर ज्यों का त्यों बना रहता है, और उसे भूख प्यास आदि उसी प्रकार से लगती है।

यह साधना ३८ दिन की साधना है, रात्रि-कालीन साधना होने की वजह से यह रात्रि में ही सम्पन्न की जाती है, इसके अलावा साधना के सभी नियम जो मैंने पहली साधना में बताये हैं, इस पर भी लागू रहते हैं, अन्तर इतना ही है कि यह साधना साधक को आसन पर खड़े-खड़े सम्पन्न करनी पड़ती है और इसमें नर अस्थियों की माला का प्रयोग किया जाता है, इसमें नित्य १०८ मालाएं जपने का विधान है।

साधक सर्वथा नग्न होकर इस साधना को सम्पन्न करे, किसी भी महीने की कृष्ण पक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी को मंगल या रविवार होने पर यह साधना प्रारम्भ करे, सामने 'लुप्त देवी यंत्र' और 'लुप्त देवी चित्र' की स्थापना कर उसकी पूजा करे और निम्न मन्त्र जप प्रारम्भ करे।

मन्त्र

ॐ ह्लूं स्लूं म्लूं क्लूं कालरात्रि महारात्रि मोहरात्रि कामाक्षी क्रीं लुप्त विलुप्त सिद्धि देहि देहि फट्।

यह मन्त्र महत्वपूर्ण है और तीक्ष्ण मन्त्र है, अतः साधक को पूर्ण क्षमता और शक्ति के साथ ही इस मंत्र का जप करना चाहिए।

निश्चित दिन तक मंत्र जप करने के बाद अंतिम दिन पचास हजार कनेर के पुष्पों से यज्ञ सम्पन्न करना चाहिए, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है, तथा साधक पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

ऐसा साधक अपने जीवन में सभी बाधाओं और समस्याओं पर विजय प्राप्त करने में सफल हो पाता है तथा उसके जीवन में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं रहती।

३–हाकी-काकी साधना

इस साधना के बारे में वर्णन तो कई स्थानों पर आया है, परन्तु इसका सूक्ष्म ज्ञान और साधना विधि कहीं पर भी प्राप्त नहीं है, इस साधना को सिद्ध करने पर साधक भूख, प्यास और नींद पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेता है, उसे जीवन में न तो भूख लगती है, न प्यास लगती है और न नींद का आभास होता है, ऐसा होने पर भी उसके शरीर में किसी प्रकार की कमजोरी और बेचैनी नहीं आती, इसलिए इस साधना को अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना कहा गया है, यह ४२ दिन की साधना है, साधक को किसी भी महीने की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन निर्जन मकान दक्षिण की ओर मुंह करके शिखा खोलकर धोती पहिन कर तथा कुक्कुटासन में बैठकर शबरी देवता स्मरण करते हुए गांठ लगी मूंज की रस्सी की मा से इस मंत्र की १०१ मालाएं नित्य रात्रि को फे चाहिए, एक माला में १०८ गांठ आवश्यक है।

यह महत्वपूर्ण और तीक्ष्ण साधना है, अतः साध को चाहिए कि जब उसमें पूरा आत्मविश्वास हो त इस साधना को सम्पन्न करे, साधनाकाल में किसी प्रक के वस्त्रों का प्रयोग सर्वथा निषिद्ध है, इसमें नित्य सात्व भोजन करे, परन्तु धीरे-धीरे भोजन की मात्रा कम कर रहे, पर इस बात का ध्यान रखे कि उसके शरीर किसी प्रकार की कमजोरी न आवे, यदि कमजोरी महसू करे तो पुनः खुराक बढ़ा सकता है।

मन्त्र

ॐ क्लीं श्रां मृतिश्वरी कंकुत्ये क्षुधा तृष्णा निद्रा रोधय रोधय भंजय भंजय हुं हुं हुं।

इस प्रकार साधना सम्पन्न करने के बाद साधक चाहिए कि वह सरसों से पचास हजार आहुति इसी म की दे, और फिर की सरसों खली तथा सरसों के तेल जल में मिलाकर उसकी उक्त मन्त्र से शिखा खोलकर में बलि देनी चाहिए, ऐसा सात रात्रि तक नित्य करे, करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है, और इसके बाद जीवन में भूख प्यास और नींद का अनुभव नहीं और न किसी प्रकार की कोई तकलीफ ही होती है।

४– सहस्र रूप साधना

यह साधना भी महत्वपूर्ण कही गई है, इसमें अपने एक शरीर को एक हजार शरीर में परिवर्तित सकता है, इसमें विशेषता यह रहती है कि प्रत्येक वैसा ही सुन्दर और आकार प्रकार का होता है, कहने का तात्पर्य यह है, कि इस साधना के से यदि साधक अपने शरीर से पांच शरीर धारण

है, तो वे पांचों ही शरीर एक ही प्रकार के होंगे, उनमें किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं होता जिस प्रकार से द्वापर में रास लीला खेलते समय भगवान श्रीकृष्ण ने हजार गोपियों के साथ हजार रूप धारण कर रास लीला खेली थी, और प्रत्येक गोपी यह समझ रही थी, कि कृष्ण तो मेरे ही साथ है, अन्य किसी के साथ नहीं, ऐसा श्रीकृष्ण ने इसी साधना के माध्यम से सम्पन्न किया होगा क्योंकि इस साधना से व्यक्ति के विचार, भावनाएं, बुद्धि, ज्ञान, चतुराई शरीर, आकार, प्रकार, लम्बाई-चौड़ाई आदि किसी भी दृष्टि से कोई न्यूनता या कमी महसूस नहीं होती, इसीलिए इस साधना को महत्वपूर्ण साधना कहा गया है।

यह ५१ दिन की साधना है, रात्रिकालीन साधना होने की वजह से साधक को रात्रि में ही साधना सिद्ध करनी चाहिए, इसमें किसी प्रकार का वस्त्र धारण नहीं किया जाता, नित्य रात्रि को चन्दन की कलम से एक हजार भोजपत्रों पर निम्न मंत्र को लिख कर संग्रह करते रहना चाहिए और अंतिम दिन वे सारे भोज पत्र समुद्र में प्रवाहित कर देने चाहिए, एक हजार भोज पत्रों पर मंत्र लिखने के अलावा [illegible] माला [illegible] इस मन्त्र को जपनी चाहिए।

मन्त्र

रह् क्लीं मंजुघोषा सहजन्या कान्हेश्वरी कालिका कन्दर्प सहस्र रूपं माहिष्मति मायाय कार्यं सिद्धये सहस्र रूपं धारय धारय पुरंदरी श्याम् नमः।

जब साधना सम्पन्न हो जाय तब अन्तिम दिन १०१ कन्याओं को भोजन करावें और प्रत्येक कन्या को एक एक वस्त्र उपहार स्वरूप दें, ऐसा करने पर साधना सिद्ध हो जाती है, और उसके बाद साधक में यह क्षमता आ जाती है, कि वह जितने भी चाहे रूप धारण कर सकता है, और इन सहस्र रूपों के माध्यम से मनोवांछित कार्य सम्पन्न कर सकता है, उदाहरण के लिए एक रूप कलकत्ता में किसी से बात कर रहा है, तो उसी समय दूसरा रूप बम्बई में किसी अन्य कार्य में संलग्न हो सकता है।

वस्तुतः यह साधना अत्यन्त ही महत्वपूर्ण रही है, परन्तु यह कष्टप्रद और तीक्ष्ण साधना है, अतः साधक को चाहिए कि वह अत्यन्त सावधानी के साथ इस साधना को सम्पन्न करे।

५— दिव्य दृष्टि साधना

कुछ साधक इसे ब्रह्माण्ड साधना भी कहते हैं, इसके माध्यम से साधक की गति और नियन्त्रण पूरे ब्रह्माण्ड में हो जाती है, और वह पूरे ब्रह्मांड की हलचलों से परिचित रहता है, इसके माध्यम से देख सकता है, और समझ सकता है, यही नहीं अपितु वह चाहे तो उसमें हस्तक्षेप भी कर सकता है, उदाहरण के लिए यदि वह इस दिव्य दृष्टि साधना के माध्यम से देख रहा है कि [illegible] के बाहर सड़क पर कोई कार जा रही है, और कुछ ही क्षणों के बाद उसकी कार का एक्सीडेन्ट होने वाला है, तो [illegible] साधना [illegible] पता [illegible] गया कि [illegible] और कार में बैठे हुए [illegible] [illegible] है, तथा उसे यह भी पता चल गया कि कुछ ही क्षणों बाद उसका एक्सीडेन्ट होने वाला है, तब यदि साधक चाहे तो इसी साधना के बल पर वह कार को सड़क से नीचे उतार कर गतिहीन कर सकता है, जिससे कि आने वाला एक्सीडेन्ट बच सके और जब दुर्घटना का क्षण समाप्त हो जाय तब वापिस उस कार को गतियुक्त बना सकता है।

[illegible] सारी क्रिया में कार में बैठे हुए चालक और अन्य [illegible] को तो पता ही नहीं चलेगा कि अचानक कार सड़क से नीचे क्यों उतर गई और क्यों प्रयत्न करने पर भी चल नहीं रही थी, और फिर अचानक किस प्रकार से चलने लग गई, पर इस प्रकार से साधक उन व्यक्तियों की जिन्दगी बचा सकता है।

इस साधना के माध्यम से साधक को पहले से ही आभास हो जाता है, कि आने वाले समय में किस स्थान पर क्या घटना घटित होने वाली है, और उस घटना में किस प्रकार से हस्तक्षेप किया जा सकता है।

यह साधना ४२ दिन की रात्रिकालीन साधना है, साधना सिद्ध करने के लिए साधक को दिव्य यन्त्र अपने सामने स्थापित करना चाहिए, यह साधना शुक्ल पक्ष की तृतीया से प्रारम्भ की जा सकती है, इसमें मूंगे की माला से नित्य १०८ मालाएं मन्त्र जप आवश्यक है।

सामने शुद्ध घृत का दीपक नियमित और अखण्ड लगा रहना चाहिए साधक को सर्वथा वस्त्र विहीन बैठकर निष्ठा के साथ मन्त्र जप करते हुए साधना सम्पन्न करनी चाहिये।

मन्त्र

ॐ ह्रीं ऐं अनुग्रहेश गं ग्लः लां लीं मंजरी लं रं षं हं प्राणात्मा रक्ष संवर्त स्वयात्म योगिनी लम्बोदरी धीरिणी वं षं रं नमः।

यह साधना सावधानी के साथ करने की जरूरत है, क्योंकि पूरे साधनाकाल में कई प्रकार के अनुभव दृष्टि-गोचर हो सकते हैं, साधक को चाहिए कि वह बिना किसी प्रकार का विचार किये और बिना किसी प्रकार की चिन्ता किये इस साधना को सम्पन्न करे।

जब ४२ दिन पूरे हो जाय, तब अन्तिम दिन एक लाख कनेर पुष्पों से इस मन्त्र के द्वारा आहुति दें, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है, और व्यक्ति दिव्य दृष्टि युक्त बन जाता है।

वस्तुतः ये पांचों साधनाएं अपने आप में महत्वपूर्ण और दिव्य हैं, तथा ये सभी साधनाएं उच्चकोटि की होते हुए भी सर्वथा गोपनीय और दुर्लभ रही है, यह अवश्य है, कि प्रत्येक साधना में कई छोटे मोटे तथ्य ऐसे होते हैं, जो गुरु के माध्यम से ही ज्ञात हो सकते हैं, अन्यथा कभी कभी साधनाकाल के बीच कुछ ऐसे व्यवधान आ जाते हैं, जिनका निराकरण उसी समय सम्भव होता है, इसी-लिए ऐसी साधनाओं में गुरु की नितान्त अनिवार्यता मानी गई है, और गुरु के सानिध्य में ही इस प्रकार की साधनाएं सम्पन्न करने की आज्ञा हमारे ऋषियों ने दी है।

प्रयत्न करने पर साधनाएं भी प्राप्त हो जाती हैं, और योग्य गुरु का सानिध्य भी प्राप्त हो जाता है, आवश्यकता तो इस बात की है, कि हममें इनके प्रति पूर्ण आस्था हो, एक निष्ठता के साथ साधना सम्पन्न करने की क्षमता हो और पूर्ण प्रयत्न कर साधना में सफलता प्राप्त करें ऐसी दृढ़ आस्था और विश्वास हो, ऐसा करने पर अवश्य ही साधना में सफलता मिल जाती है, और वह उच्च कोटि की साधना में सिद्ध हो जाता है।

इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि साधक देश भक्त और समाज सेवी बना रहे, कोई ऐसी साधना या किया सम्पन्न न करे जो देश, समाज और नैतिक नियमों के विरुद्ध हो, हमारे जीवन का प्रत्येक क्षण समाज और देश हित में व्यतीत हो तभी साधना की सार्थकता है।

वस्तुतः ये साधनाएं अत्यधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है, साधकों को चाहिए कि वे इन साधनाओं को सम्पन्न करें और पूर्वजों की थाती को अक्षुण्ण रखते हुए सौभाग्यशाली बनें।

— ❀ —

वर्ष के अन्त में यह लेख पाठकों को इसलिए समर्पित है कि हम आपको आगामी वर्ष में इन आश्चर्यों के सम्पर्क में लाने का प्रयास करेंगे......

छः आधुनिकतम आश्चर्य

☼ स्वामी गिरिदास

यों तो संसार में कई ऐसे पदार्थ अथवा घटनाएं हैं जो अपने आप में आश्चर्य कहा जाता है, चीन की दीवार, भारत का ताजमहल और ऐसी कई वस्तुएं हैं, जिनको देखकर दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है, परन्तु ये आश्चर्य तो अब पुराने पड़ चुके हैं, इनके अलावा भी ऐसे-ऐसे आश्चर्य हमारे चारों ओर बिखरे पड़े हैं, जिन्हें हम पहिचान नहीं पाये, इस लेख में मैं इन छः महान आश्चर्यों के बारे में पहली बार विवरण दे रहा हूं जो आप सब के सामने हैं, और जो आपके जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन लाने में समर्थ है।

हमारे चारों ओर दायें-बायें, ऊपर-नीचे और यहां तक कि हमारे अन्दर भी आश्चर्य ही आश्चर्य भरे हुए हैं, जिनका पता बहुत ही कम लोगों को है, पढ़िये इस लेख में वे आधुनिकतम आश्चर्य, जो हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

१- पौंजर-कैंजर की आश्चर्यजनक दवा

पौंजर संसार का आधुनिकतम आश्चर्य है, इसे "बाल गन्द" भी कहते हैं, अमरनाथ की यात्रा में और जम्मू की पहाड़ियों में जंगली बकरे बहुतायत से मिल जाते हैं, इनमें इतनी अधिक शक्ति होती है, कि ये शेर या चीते से भी भिड़ जाते हैं, और अपने पैने नुकीले सींगों से उसे समाप्त कर देते हैं, १८ फीट चौड़ी उफनती नदी को ये एक छलांग में पार कर लेते हैं, और पहाड़ पर इस तेजी से चढ़ जाते हैं, कि देखकर इनकी ताकत पर आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है।

जंगल में विषयुक्त पौधा होता है, जो अत्यन्त जहरीला होता है, और जिसके स्पर्श से ही आदमी बेहोश हो जाता है, जंगली बकरा इस पौधे को बड़े चाव से खाता है, और खाने के कुछ समय बाद वहीं पर गिरकर बेहोश हो जाता है, और उसके मुंह से लार निकलती रहती है, यह लार हवा लगने पर ठोस होती रहती है, कुछ समय बाद बकरा स्वस्थ होकर आगे बढ़ जाता है,

और वह ठोस बनी हुई लार जिसे "पौअर" या अवमन्ध कहते हैं रह जाती है, यह अत्यधिक मूल्यवान है, बड़े शहरों में जानकार वैद्य दस ग्राम पौअर के तीन-चार हजार रुपये देने को तैयार रहते हैं, यह काले रंग का हल्का फेन युक्त सा होता है।

कैंसर में यह संसार का आश्चर्यजनक वरदान है, कई वर्षों के बाद में अब अधिकार पूर्ण स्वर से यह कहने में समर्थ हूँ, कि यदि पौअर की एक रत्ती मात्रा नागरबेल के रस में रोगी को दी जाय तो मात्र सात दिन के सेवन से ही उसका कैंसर समाप्त हो जाता है, मैंने इस पौअर के माध्यम से ब्लड कैंसर, थ्रोट कैंसर और अन्य सभी प्रकार के कैंसर का सफलतापूर्वक इलाज किया है, और मुझे इसमें पूर्ण श्रेय मिला है, इस औषधि और इसके गुणों के बारे में ज्ञान पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के द्वारा ही मुझे प्राप्त हुआ है, और इसके लिए मैं उनका ऋणी हूँ।

वास्तव में ही पौअर विश्व का आधुनिकतम आश्चर्य है, जो विश्व की लाइलाज बीमारी कैंसर को पूरी तरह से नियन्त्रण करने में समर्थ है।

२- स्वतः निर्मित बर्फ का शिवलिंग

भारतवर्ष में तीर्थ स्थान तो सैकड़ों हजारों हैं, और सब का अपने आप में अलग-अलग महत्व है, परन्तु भगवान अमरनाथ की अपनी ही विशेषता है, यहां पर पहाड़ से बूंद बूंद टपकते हुए पानी से स्वतः बर्फ का शिवलिंग बनता है, जो कि अपने आप में आश्चर्यजनक और अद्भुत है, आश्चर्य यह है, कि इस पहाड़ के अन्य स्थानों पर भी पानी टपकता है, परन्तु शिवलिंग निर्मित नहीं होता, केवल एक स्थान पर ही यह स्वतः प्रकृति निर्मित शिवलिंग बनता है, जो कि अपने आप में अद्भुत आश्चर्ययुक्त और तेजस्वी है।

श्रीनगर से पहलगांव और फिर चन्दनवाड़ी, शेषनाग पंचतरणी होते हुए अमरनाथ की गुफा तक पहुंचा जाता है, लगभग पन्द्रह हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित यह प्राकृतिक गुफा अपने आप में अद्भुत आश्चर्ययुक्त है; ऐसे शिवलिंग के दर्शन कर जीवन में सात्विकता और पवित्रता का भान होता है, वास्तव में ही यह संसार का एक आश्चर्य है, विश्व में कई स्थानों पर गुफाएं होंगी पानी टपकता होगा, पर बिल्कुल शिवलिंग के आकार को ग्रहण करती हुई बूंद अन्य किसी स्थान पर सम्भव नहीं होगी, इसीलिए तो यह आधुनिकतम आश्चर्य है।

३- सप्त श्रृंग गुफा

जम्मू से २३६ मील दूर पारस पर्वत है, जिसके पत्थर नीलाभ लिए हुए चमकदार है, अन्य सभी पर्वत जहां लाल रंग के है, वहां यह अकेला पहाड़ सामान्य नीली झांई लिए हुए है, कहते हैं, कि इस पहाड़ में पारस पत्थर कभी-कभी यात्रियों को मिल जाता है, इसी पहाड़ में एक गुफा है, जिसे "सप्त श्रृंग गुफा" कहते हैं, यह पहाड़ आगे चलकर श्रीनगर से १३५ मील दूर पंचतरणी के पहाड़ से मिलता है, इस गुफा का द्वार लगभग ८० फीट चौड़ा और १४० फीट ऊंचा है, अन्दर से यह गुफा लगभग सौ मील लम्बी और ८० मील चौड़ी है, संसार की यह एक मात्र गुफा है, जो इतनी लम्बी चौड़ी है।

इस गुफा की अपनी ही एक विशेषता है, आज भी इस गुफा में हजारों सन्यासी साधना रत दिखाई दे जाते हैं, जिनमें से कई सन्यासियों की आयु तो सौ वर्षों से भी ज्यादा लम्बी है, उनकी धवल शुभ्र दाढ़ी, तेजस्वी मु मण्डल और शांत मुद्रा बरबस ही शांति सुख और ज्ञान प्रदान करने में समर्थ है।

आश्चर्य की बात यह है, कि ऊपर से यह पा बर्फीला है, परन्तु गुफा के अन्दर समशीतोष्ण या आ निक भाषा में "एयर-कन्डीशन्ड" है, सर्दी में यह सामान्य गर्म रहती है, और गर्मियों में यह ठण् गुफा में सात अद्वितीय झरने हैं, जिनमें सात प्रकार पानी निरन्तर बहता रहता है, लगभग सौ ऐसे छोटे झरने हैं, जिनमें गर्म उफनता हुआ पानी बहुत

और नीचे कुण्ड में जाकर गिरता है, आश्चर्य की बात यह है, कि इस गुफा में अद्वितीय देव दारु के पेड़ पौधे और पुष्प बिखरे हुए हैं, चारों तरफ हरे मुलायम गलीचे की तरह हरी घास बिछी हुई है, जिस पर बैठना ईश्वर का वरदान ही कहा जा सकता है, बीच में एक मील लम्बा चौड़ा एक मैदान है, जिसमें लाखों व्यक्ति एक साथ बैठ सकते हैं, यह तो गुरुदेव की ही कृपा है, कि मैं ऐसी अद्वितीय गुफा के सम्पर्क में आ सका, मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ, कि ऐसी अद्वितीय गुफा अपने आप में आधुनिक आश्चर्य ही है।

४– अनाहत चक्र

बाहर ही नहीं हमारे अन्दर भी आश्चर्य भरे हुए हैं, हृदय के पास स्थित 'अनाहत चक्र' ऐसा ही आश्चर्य है, इसे जाग्रत करने पर हम पूरे विश्व के सम्पर्क में स्वतः आ जाते हैं, शास्त्रों में लिखा है कि पूरा ब्रह्माण्ड हमारे अन्दर स्थित है, यह मैं अनाहत चक्र जगा कर ही जान पाया, ज्योंही मेरा अनाहत चक्र जाग्रत हुआ, मुझे एक झटका सा लगा और सारे शरीर में सिहरन सी व्याप्त हो गई, ऐसा लगा कि मैं पूरे विश्व को और विश्व में होने वाली घटनाओं को देख रहा हूं, मैं एक स्थान पर बैठा-बैठा सभी स्थानों, व्यक्तियों और घटनाओं को देख पाने में समर्थ हो सका, संसार का आधुनिकतम विज्ञान भी ऐसी शक्ति देने में असमर्थ है, कि बिना किसी उपकरण के व्यक्ति पूरे विश्व की घटनाओं के सम्पर्क में आ सके या उन दृश्यों को देख सके, यह कुण्डलिनी जागरण की यात्रा के मध्य अनाहत चक्र जाग्रत होने पर ही सम्भव है, मैंने इस आधुनिकतम आश्चर्य को अपने हृदय में संजोकर रखा है।

५– त्रियंक

हमारा शरीर असीम शक्ति पुंज का आधार है, इस शरीर के माध्यम से अतुलनीय शक्ति और सामर्थ्य पैदा की जा सकती है, 'त्रियंक' एक विशेष साधना पद्धति है, जो अघोर साधना से सम्बन्धित है, इस साधना के माध्यम से शरीर में अतुलनीय बल और शक्ति पैदा की जा सकती है, जब व्यक्ति त्रियंक साधना में सम्पन्न होता है, तो उसकी आंखों में एक विशेष अग्नि पुंज पैदा हो जाता है और उसके माध्यम से उसकी आंखों से ऐसी लपट निकलती है कि वह एक इंच मोटी इस्पात को भी पिघला देती है, मुंह से फूत्कार निकालने पर वह मोटर कार को आठ-दस फीट ऊपर हवा में कागज की तरह उछाल सकती है, वास्तव में ही यह साधना अद्वितीय साधना है, जिसका ज्ञान मात्र दो वर्ष पहले ही सिद्धाश्रम के योगी स्वामी अरविन्द को लगा था और उन्हीं के द्वारा यह विकसित हुई, आज प्रत्येक सन्यासी और योगी इस साधना को सम्पन्न करने के लिए कृतसंकल्प है,

वास्तव में ही यह साधना अद्भुत और आश्चर्यजनक है जो मानव शरीर को असीम शक्ति से भर देता है।

६– त्रिजटा अघोरी

मैंने जीवन में योगी, सन्यासी, सिद्ध अघोरी और साधक तो लाखों देखे होंगे, पर त्रिजटा का व्यक्तित्व एक आश्चर्य ही है, उसे देखकर एक दहशत सी पैदा होती है, पर वह हृदय से पुष्प से भी ज्यादा कोमल और मृदु है, सौ-सौ मन वजन के पत्थरों को दोनों हाथों में उठाकर आपस में टकरा कर चूर्ण-चूर्ण कर देना उसके लिये सहज सम्भव है, जंगली भैंसे को बायें हाथ में उठाकर उछाल देना कोई मुश्किल बात नहीं है और अपनी आंखों से मैंने दोनों हाथों के नाखूनों से धरती को फाड़कर दस फीट गहरी खाई बनाते हुए उसे देखा है, किसी भी लोक में जाना और तन्त्र के माध्यम से कुछ भी कर लेना कठिन नहीं; ऐसा बलिष्ठ और तेजस्वी व्यक्तित्व जब अपने गुरु के सामने होता है, तो एक छोटे बच्चे की तरह मृदु और कोमल हो जाता है, मैंने उसे सुबकते हुए, गुरु भाई के लिए रोते हुए और उनके इन्तजार में तड़पते और विह्वल होते हुए भी देखा है, संसार का यह एक मात्र व्यक्तित्व है, जो अपने आप में अद्वितीय और आश्चर्ययुक्त है।

★

पत्रिका पाठकों के लिए अद्वितीय अवसर

घर बैठे साधना कीजिये

संपूर्ण साधना विधि, साधना रहस्य, गोपनीय मंत्र एवं गूढ़ज्ञान से परिपूर्ण

साधना–साहित्य

- षोडषी त्रिपुर सुन्दरी साधना
- शिव साधना
- उच्छिष्ट गणपति साधना
- महालक्ष्मी साधना
- पंचांगुली साधना
- बगलामुखी साधना
- तारा महाविद्या साधना
- कुण्डलिनी जागरण
- सहस्रार जागरण साधना

उपरोक्त साधनाओं में से कोई एक साधना चुनकर हमें नाम लिख भेजिये, हम उससे संबंधित साहित्य, मन्त्रसिद्ध यन्त्र, सम्बन्धित चित्र आदि आपको भेज देंगे।

और यह सब मात्र ६०) रुपयों में। विश्वास नहीं होता, कि इतने कम मूल्य में उच्च कोटि के यन्त्र चित्र व पूरा साहित्य प्राप्त हो सकता है, पर पत्रिका परिवार ने अपने पाठकों के लिए यह सब कर दिखाया है।

धनराशि अग्रिम मनिआर्डर या बैंक ड्राफ्ट से निम्न पते पर भेजें।

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान — डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राज०)

जनवरी-फरवरी १९८५

का

अद्भुत आख्यान विशेषांक

क्या ऐसे विशेषांक का आप अधीरता से इन्तजार नहीं कर रहे हैं ?

एक ऐसा विशेषांक, जो [illegible] है। इस अंक के प्रारम्भ में जो लेख छपे हैं, उनके अलावा भी विशेषांक पूरा होते होते कई महत्वपूर्ण आलेख और प्राप्त हो गये थे, जो इसमें प्रकाशित हुए हैं। उनमें से कुछ लेखों की बानगी देखिये—

मानसिक तनाव का सामना इस प्रकार से करें ※ एक गोपनीय साधना विधि : जिसके माध्यम से लॉटरी से पुरस्कार प्राप्त किया जा सकता है ※ ब्यूटी क्वीन बनने की सर्वोत्कृष्ट आयुर्वेदिक औषधि ※ सुन्दर पत्नियाँ बनने के पांच फार्मूले ※ गणपति विघ्न हरो। ※ तिब्बती लामा से प्राप्त गोपनीय तन्त्र ※ नींबू के प्रयोग से मैरिटल ट्रबल दूर कीजिये ※ पूर्वजों ※ [illegible] हटाने का एक अभिनव प्रयास ※ कुत्ते के काटे का आयुर्वेदिक इलाज ※ [illegible] की खोज, जिनके द्वारा सफल जीवन पाया जा सकता है, ※ [illegible] बदल गये ※ मनचाहा काम पाने के [illegible] प्रयोग ※ [illegible] ※ सन्तानहीनों के लिए एक नई आशा की किरण ※ सम्मोहन या [illegible] ※ पेट कम करने के पांच मौलिक व्यायाम ※ किसी भी साधना में सफलता प्राप्त करें।

और इस बार आपका [illegible] जनवरी ८५ का अंक [illegible] आपके हाथों में पहुंचने को आतुर है।

यह विशेषांक और वर्ष भर प्रत्येक महीने [illegible] सामग्री से युक्त पत्रिका [illegible] घर की शोभा है।

सम्पर्क
मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डा० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - ३४२००१ (राजस्थान)